SANDIPANI ACADEMY

PENDRI MASTURI, BILASPUR (C.G.)

RESEARCH WORK BY FACULTY

SESSION – 2018-19

S.NO.	FACULTY NAME	TITAL OF PAPER	NAME OF JOURNALS
1	Dr. RITA SINGH	"शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान प्रगति के बारे में प्रतिभागियों के आद्यतन का अध्ययन करना"	शोध धारा
2	Dr. RITA SINGH	"छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"	Sodh Sandarsh - VII
3	Dr. RITA SINGH	"छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"	Sodh Sandarsh - VII
4	Ms. DIPTI SINGH RATHORE	"शिक्षक प्रशिक्षण मूलतः निरंतरता, परिवर्तन एवं कौशलों का समागम"	Survir Publication
5	Ms. DIPTI SINGH RATHORE	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन एवं परीक्षा संबंधी चिन्ता का अध्ययन"	दृष्टिकोण कला मानविकीय एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका
6	Mrs. RENU SAHU	"दीप शिखा" के अंशो में महादेवी वर्मा की साहित्यीक चेतना का अवलोकन"	International Research Journal of humans resource and Social Science
7	Ms. KAVITA BISHWAS	GLOBAL TRENDS IN TEACHER EDUCATION	SOUVENIR PUBLICATION
8	Ms. SHRITI MAJUMDAR	"खरपतवार पौधौ के फाइटोकैमिकल विश्लेषण का अध्ययन"	दृष्टिकोण कला मानविकीय एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

ISSN : 0975-3664 UGC : 41386 RNI : U.P.BIL/2012/43696
Year : 2018 Year : JUNE Vol. : 2

शोध - धारा
SHODH-DHARA

A UGC Listed Research Journal

Grade 'A' Impact Factor 5

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित
Published by Shakshik Avam Anusandhan Sansthan
Orai (Jalaun) U.P.

Principal
Department of Education
Sandipani Acade

Scanned with OKEN Scanner

के संतो की भूमिका	डॉ० सपना कॉर	
४५. राष्ट्र विकास में महिला की भूमिका	डॉ० ववीता मिश्रा	185-188
४६. राष्ट्र विकास मे नारी की भूमिका	डॉ० अविनाश कुमार लाल श्रीमती अविन्दना जॉन सुश्री साधना राजपूत	189-191
४७. राष्ट्र विकास मे नारी की भूमिका	डॉ० बालकराम चौकसे	192-195
४८. राष्ट्र निर्माण और विकास में बस्तर जिले की महिलाओं का योगदान	सियालाल नाग डॉ श्रीमती लक्ष्मी लेकाम	196-200
४९. राष्ट्र विकास मे नारी की भूमिका	डॉ० (श्रीमती) सुनीला एक्का	201-202
५०. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ० हीरालाल शर्मा डॉ० ईशाबेला लकड़ा	203-206
५१. शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान प्रगति के बारे में प्रतिभागियों के ज्ञान के अद्यतन का अध्ययन करना	रीता सिंह	207-209
५२. राष्ट्र विकास में नारी का योगदान	डॉ० शशि गुप्ता	210-212
५३. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ० सुजाता सेमुअल डॉ० सपना कॉर	213-215
15 ५४. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	विवेक सिंह	216-217
19 ५५. नारी शिक्षा और राष्ट्र का विकास	अनिल कुमार सिंह	218-220
५६. राष्ट्र–विकास में नारी की भूमिका	श्रीमती मनोरमा चन्द्रा	221-223
25 ५७. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	कु० प्रियंका यादव अखिलेश कुमार साहू	224-226
32 ५८. लोकतांत्रिक सहभागिता, सामाजिक परिवर्तन एवं महिला सशक्तीकरण	कादम्बरी वैष्णव	227-231
36 ५९. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	अर्चना वी.	232-236
41 ६०. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी वृजवासी	237-239
44 ६१. भारत राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण	डॉ. घनश्याम दुबे अभिषेक अग्रवाल	240-248
48 ६२. राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ. दुर्गा वाजपेयी डॉ. शारदा दुबे	249-251
51 ६३. राष्ट्र विकास का आधार स्तम्भ 'नारी'	ज्योति कुशवाह	252-254
53 ६४. राष्ट्रीय विकास के निर्धारक तत्व	डॉ. सी.वी. खूंटे श्री जी.एन. भतपरे	255-258
60 ६५. वर्तमान भारत में सामाजिक समस्याओं के समाधान में रक्त वर्ग वर्गीकरण की प्रासंगिकता	संत कुमार	259-263
168 173 ६६. नारी सशक्तिकरण	डॉ. संतोष कुमार ठाकुर डॉ. किरण ठाकुर	264-266
177 181 67. Current Status,Lacunas and Scope of Scientific	Dr. Ashish Tiwari	267-273

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696, UGC NO. : 41386
SHODH-DHARA ; JUN 18; Vol.1; P. 207-209

शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान प्रगति के बारे में प्रतिभागियों के ज्ञान के अद्यतन का अध्ययन करना

रीता सिंह

विभागाध्यक्ष, सांदीपानी एकेडमी, पेण्ड्री, मरतूरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

(प्राप्त : १० मई २०१८)

Abstract

बच्चों को शिक्षित करने एवं उनके सर्वांगीण विकास में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षकीय कार्य की सफलता शिक्षकों की कार्यशैली, शिक्षण कौशल, शिक्षकों की अभिवृत्ति के सकारात्मक होने पर निर्भर करती है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूज्यनीय रहता है। कोई उसे अध्यापक या टीचर कहता है। ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है। सिखाता है और जिनका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनों में कहा जाये तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक की अपने जीवन के अंत तक मार्ग दर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता रहता है। तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है।

References : 05 Table : 00 Figure : 00

Key Words : शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा और ज्ञान की अद्यतन स्थिति।

प्रस्तावना

राष्ट्र के विकास में शिक्षा व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि यह ज्ञान का प्रसार करती है। तथा बालकों को सभी दक्षताओं से परिपूर्ण करती है। शिक्षा के वाहक गुरू की भी ऐसी ही शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है जो उनके विचारों कार्यो, व्यवहार में गुणवत्ता लाये। शिक्षक २१ वीं शताब्दी का नेतृत्व करता है। बालकों को व्यवहारिक तथा सशक्त पहचान देने में उसका प्रभावी योग है। शिक्षक अपने अधिगम संबंधी कार्यो को तभी प्रभावी बना सकता है, जब वह स्वयं जागरूक हो। स्वयं का विकास प्रशिक्षण द्वारा ही संभव होगा। शिक्षा को समाज तक प्रेषित करने में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा किसी से, कहीं से, कभी भी ली जा सकती है। बस केवल शिक्षा लेने वाला जागरूक हो। सारे देश में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को मानसिक तनाव से दूर रखने के लिए प्रशिक्षण को अनिवार्य बनाया जा रहा है। किसी भी शैक्षणिक कार्य की सफलता उसे क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों पर निर्भर करती है। अध्यापनकर्ता, आचार्य क्षेत्र एवं विषय विशेष में योग्यता रखते हैं; फिर इस विषय में शोध संपन्न किया गया है।

समय–समय पर प्रशिक्षण नये–नये तकनीकी ज्ञान, विधि, प्रावेधि, प्रशासन, प्रबंधन, पर्यावरण सुरक्षा आदि शिक्षकों को अवगत कराया जाता है। प्रशिक्षण ही वह साधन है, जिसके माध्यम से शिक्षक के कार्य व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता- शिक्षा की किसी भी प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शैक्षिक योजना के क्रियान्वयन में शिक्षक अपने दायित्व का निर्वहन करते हैं। बालक जब विद्यालय जाता है;

Principal
Department of Education
Sandipani Academy

Scanned with OKEN Scanner

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती रीता सिंह[1] , डॉ. पार्वती यादव[2]
[1]शोधार्थी , डॉ सी.वी रामन् विश्वविद्यालय , कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
[2]सहायक प्राध्यापक , डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

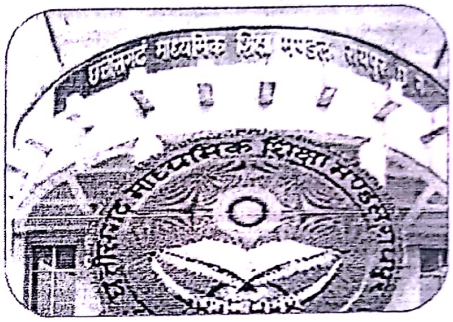

शिक्षण की प्रक्रिया में अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी सक्रिय रहकर सीखे तथा अभिभावक भी यहीं चाहते है कि वह प्रतिभाशाली हो। लेकिन कक्षा में कुछ बच्चें ही सीखने–सिखाने की प्राक्रिया में सक्रिय रहते है। इस समस्या के निवारण के लिए अध्यापन कार्य में कुछ नवीनता एवं परिवर्तन की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी में अपार संभावनाएँ एवं क्षमताएँ होती है, जिनके विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराने का कार्य अध्यापक–पालक व समाज का होता है। सर्वाधिक योगदान शिक्षक का व उनकी शिक्षण विधि का होता है। बच्चा जिन आदतों व संस्कारों को सीखता है वे जीवन पर्यन्त रहते है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके लिए शोधार्थी द्वारा बिलासपुर जिले के 15 छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल स्कूलों के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अभिभावक सहभागिता के लिए विजय लक्ष्मी चौहान और गुंजन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित उपकरण का नाम Parental Involvement scale (PIS–CA) को एवं परीक्षा दुश्चिंता के लिए मधु अग्रवाल और वर्षा कौशल द्वारा निर्मित उपकरण का नाम Students Examination Anxiety Test (SEAT) एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के अंकों का अध्ययन किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

Keywords – अभिभावक सहभागिता, परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

विद्यार्थियों में सर्वाधिक तनाव परीक्षा के दिनों में देखने को मिलता है खासकर बोर्ड परीक्षाओं के दौरान गिल, मनीषा (2011) ने अपने लेख 'एग्जामिनेशन स्ट्रेस' में लिखा है "परीक्षा को लेकर तनाव आम बात है। खासकर बोर्ड परीक्षाओं के दौरान यह तनाव छात्रों को कुछ ज्यादा ही सताता है। ऐसा नहीं है कि यह तनाव सिर्फ परीक्षा के दौरान ही होता है, बल्कि परीक्षा के परिणाम को लेकर परीक्षा के बाद भी छात्र परीक्षा तनाव में परेशान रहते है इससे बचना जरूरी है।" तनाव एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है जो लोगों में वैसी घटनाओं के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करती है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

विद्यार्थियों में अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसंबंध है। परीक्षा के समय अभिभावक विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में डर, भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़ापन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बालक तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ हद तक परीक्षा दुश्चिंता को कम किया जा सकता है। 'परीक्षा' शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है। इसके द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का ही पता नहीं चलता बल्कि अध्यापक की कार्यकुशलता एवं शिक्षा की गुणवत्ता का आंकलन भी सरलता से हो जाता है। परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी परीक्ष को अपन भविष्य से जोड़ लेते हैं तथा शिक्षकों एवं अभिभावकों के अत्यधिक दबाव में विद्यार्थियों में चिंता का स्तर बढ़ जाता है। कभी–कभी तनाव की तीव्रता इस सीमा तक बढ़ जाती है कि 'विद्यार्थी आत्महत्या जैसा घातक निर्णय ले बैठते हैं। मनानी, प्रीति तथा गौतम, मुकेश कुमार (2011) द्वारा किये गए शोध अध्ययन परिणामों से स्पष्ट है कि परीक्षा संबंधी चिंता विद्यार्थियों को निराशा से भर देती है तथा उनके दिमाग में आत्महत्या जैसे घातक विचार को भी जन्म देती है। विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाला तनाव उनके परीक्षा परिणाम पर भी असर डालता है।

अध्ययन का औचित्य

इस पद को शोधार्थी द्वारा इसलिये लिया जा रहा है क्योंकि 10वीं के छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल में अध्ययनरत् विधार्थियों का अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता और उनमे कितना अंतर पाया जाता है। इसे सी.जी और सी. बी.एस.ई के विद्यार्थियों का उनके अभिभावक परीक्षा के दिनों में कितना ध्यान रख पाते है ताकि वे परीक्षा दुश्चिंता को कम कर सके। जहॉ तक पूर्व संचित ज्ञान एवं पूर्व में सम्पन्न हुए अनुसंधानों से यह ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मंडल मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों का अभिभावक सहभागिता एंव परीक्षा दुश्चिंता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका तुलनात्मक अध्ययन किसी और शोधार्थी द्वारा नहीं किया गया है। इसमें यही देखने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल की अपेक्षा केन्द्रीय शिक्षा मण्डल में पढ़ने वाले बच्चों के पैरेंन्ट्स में अभिभावक सहभागिता ज्यादा देखी जाती है।

समस्या कथन

"छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"

प्रयुक्त पदों की परिभाषा –

1. **अभिभावक सहभागिता –**

अभिभावक की सहभागिता औपचारिक रूप से समुदाय संस्कृति, शिक्षा के क्षेत्र एवं विभिन्न क्षेत्रों की दक्षता के लिए बालक व बालिकाओं के प्रति एक अच्छा तालमेल बिठा कर समन्वयक रिश्ता स्थापित करना ही अभिभावक सहभागिता है।

2. **परीक्षा दुश्चिंता**

परीक्षण में घबराहट एक मनोवैज्ञानिक अवस्था होती है जो कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी परीक्षण के पहले अत्यधिक तनाव, चिंता व असहजता का अनुभव किया जाता है। यह चिंता अधिगम व प्रदर्शन में महत्वपूर्ण बाधा के रूप में उत्पन्न होता है। जो कि प्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक प्रदर्शन को कम करता है।

3. **शैक्षिक उपलब्धि** – शैक्षिक उपलब्धि महाविद्यालयों के परीक्षाओं से संदर्भित होता है। परीक्षाओं के अंतिम में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त कुल अंक जो कि महाविद्यालयों द्वारा अभिलेख के रूप में रखा जाता है व जिसके माध्यम से शैक्षणिक उपलब्धियों में महाविद्यालयों द्वारा चिंतन किया जाता है।
4. **छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा**
5. **केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल**

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन का उद्देश्य –

1. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन।
2. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना –

1. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।
2. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

शोध विधि –

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा आंकड़ों के संग्रहण हेतु बिलासपुर जिले के केन्द्रिय विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले समस्त छात्र जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किये गए हैं इनमें से न्यादर्श हेतु केन्द्रिय शिक्षा मण्डल के 15 विद्यालयों में से 300 विद्यार्थियों का साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नानुसार शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है–

- मधु अग्रवाल और वर्शा कौसल द्वारा निर्मित – Students Examination Anxiety Test (SEAT)
- विजय लक्ष्मी चौहान और गुंजन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित – Parental Involvement scale (PIS –CA)
- शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के अंकों का अध्ययन किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यकीय विधि –

सहसंबंध गुणांक $r = \frac{\sum xy}{\sqrt{\sum x^2 . \sum y^2}}$

HO1 छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

समूह	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान	$\sum x^2$ & $\sum y^2$	$\sum xy$	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
अभिभावक सहभागिता	600	78.46833	46221.4	22784.32	0.398		0.05=0.062	धनात्मक सहसंबंध
शैक्षिक उपलब्धि	600	73.843	71007.17				0.01=0.081	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में चरों में मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने हेतु कार्ल पियर्सन के गुणन–आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रिय शिक्षा माध्यमिक के अंतर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों (N=1200) की अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 78.46833 तथा 73.843 है तथा इनके मध्य का सहसंबंध गुणांक 0.398 है। सार्थकता कोटि (df) = 1198 के लिए 'r' का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.081 है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.062 है। r के प्राप्त मान 'r' के सारणी मान से 0.01 तथा 0.05 दोनों ही स्तरों पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना HO1 " छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।" अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष – निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अंतर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध हैं।

HO2 : छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

समूह	विद्यार्थियो की संख्या N	मध्यमान	$\sum x^2$ & $\sum y^2$	$\sum xy$	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
परीक्षा दुश्चिंता	600	19.63833	7198.518	3229.331	0.143		0.05=0.062	धनात्मक सहसंबंध
शैक्षिक उपलब्धि	600	73.843	71007.1				0.01=0.081	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में चरों में मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने हेतु कार्ल पियर्सन के गुणन–आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रिय शिक्षा माध्यमिक के अंतर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों (N=1200) की अभिभावक

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 21.8605 तथा 8551.833 है तथा इनके मध्य का सहसंबंध गुणांक 0.143 है। सार्थकता कोटि (df) = 1198 के लिए 'r' का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.081 है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.062 है। r के प्राप्त मान 'r' के सारणी मान से 0.01 तथा 0.05 दोनों ही स्तरों पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना HO_2 " छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।" अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध हैं।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल में आने वाले कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं अभिभावक सहभागिता दोनों का ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सहसंबंध पाया गया।

उपसंहार

परीक्षा के समय अभिभावक विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में डर, भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़पन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बालक तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ हद तक परीक्षा दुश्चिंता को कम किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

- भटनागर, डॉ. सुरेश एवं जोशी, डॉ. सुरेश – शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान
- Henry and Garret, Statistical Methods.
- चौहान, सुदीप कुमार, परासर, ज्योतीमा, शर्मा, कु. पुनम – बाल मनोविज्ञान एक अध्ययन
- Jackson, E. (2008). " Mathematic anxiety in students teachers."
- लाल, रमन बिहारी एवं जोशी, सुरेश चन्द्र – शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी
- Melincavage, SM (2011). "Students Nurse's Experiences of anxiety in the clinical setting."
- Schatz, DB & Rostain, AL (2006). "ADHD with comoribid Anxiety a review of the current literature."
- Sharif, F. & Armitage, P. (2004). "The effect of psychological and education counseling in reducing anxiety in nursing students."
- Terrion, JL & Leonard, D. (2007). "A taxonomy of the characteristic of student peer mentors in higher education finings from a literature review."
- Zientek, LR. & Yetkiner, ZE (2010). Characterizing the mathematics anxiety literature using confidence intervals as a literature review''

श्रीमती रीता सिंह
शोधार्थी , डॉ.सी.वी. रामन विश्वविद्यालय , कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pondri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

(U.G.C. Approved Journal No. : 41329)

ISSN No. - 2319–5908

Education : Shodh Sandarsh-VII, Vol.-XXIII, June-2019, Page : 52-56

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

छत्तीसगढ़ी माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

*डॉ. पार्वती यादव** *श्रीमती रीता सिंह***

सारांश

शिक्षण की प्रक्रिया में अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी सक्रिय रहकर सीखें तथा अभिभावक भी यही चाहते हैं कि वह प्रतिभाशाली हो। लेकिन कक्षा में कुछ बच्चे ही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय रहते हैं। इस समस्या के निवारण के लिए अध्यापन कार्य में कुछ नवीनता एवं परिवर्तन की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी में अपात संभावनाएँ क्षमताएँ होती हैं, जिनके विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराने का कार्य अध्यापक-पालक व समाज का होता है। सर्वाधिक योगदान शिक्षक का व उनकी शिक्षण विधि का होता है। बच्चा जिन आदतों व संस्कारों को सीखता है वे जीवनपर्यन्त रहते हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके लिए शोधार्थी द्वारा बिलासपुर जिले के 15 छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल स्कूलों के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अभिभावक सहभागिता के लिए विजय लक्ष्मी चौहान और गुंजन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित उपकरण का नाम Parental Involvement Scale (PIS-CA) को एवं परीक्षा दुश्चिंता के लिए मधु अग्रवाल और वर्षा कौशल द्वारा निर्मित उपकरण का नाम Students Examination Anxiety Test (SEAT) एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के अंकों का अध्ययन किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि छत्तीगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा 10वीं पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध है।

अभिभावक सहभागिता, परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

विद्यार्थियों में सर्वाधिक तनाव परीक्षा के दिनों में देखने को मिलता है। खासकर बोर्ड परीक्षाओं के दौरान गिल, मनीषा (2011) ने अपने लेख 'एक्जामिनेशन स्ट्रेस' में लिखा है, "परीक्षा को लेकर तनाव आम बात है। खासकर बोर्ड परीक्षाओं के दौरान वह तनाव छात्रों को कुछ ज्यादा ही सताता है। ऐसा नहीं कि यह तनाव सिर्फ परीक्षा के दौरान ही होता है, बल्कि परीक्षा के परिणाम को लेकर परीक्षा के बाद भी छात्र परीक्षा तनाव में परेशान रहते हैं इससे बचना जरूरी है।" तनाव एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है जो लोगों में वैसी घटनाओं के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करती है। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि छत्तीगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध होता है। परीक्षा के समय अभिभावक विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में डर, भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़ापन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बाल तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

** शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

हद तक परीक्षा दश्चिंता के कम किया जा सकता है। 'परीक्षा' शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है। इसके द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता ही नहीं चलता बल्कि अध्यापक की कार्यकुशलता एवं शिक्षा की गुणवत्ता का आंकलन भी सरलता से हो जाता है। परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी परीक्षा को अपने भविष्य से जोड़ लेते हैं तथा शिक्षकों एवं अभिभावकों के अत्यधिक दबाव में विद्यार्थियों में चिन्ता का स्तर बढ़ जाता है। कभी-कभी तनाव की तीव्रता इस सीमा तक बढ़ जाती है कि विद्यार्थी आत्महत्या जैसा घातक निर्णय ले बैठतें हैं। मनानी, प्रीति तथा गौतम, मुकेश कुमार (2011) द्वारा किए गये शोध अध्ययन परिणामों से स्पष्ट है कि परीक्षा सम्बन्धी चिन्ता विद्यार्थियों को निराशा से भर देती है तथा उनके दिमाग मों आत्महत्या जैसे घातक विटार को भी जन्म देती है। विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाला तनाव उनके परीक्षा परिणाम पर भी असर डालता है।

अध्ययन का औचित्य

इस पद को शोधार्थी द्वारा इसलिए लिया जा रहा है क्योंकि 10वीं के छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है और उनमें कितना अन्तर पाया जाता है। इसे सी.जी. और सी.बी.एस.ई. के विद्यार्थियों का उनके अभिभावक परीक्षा के दिनों में कितना ध्यान रख पाते हैं ताकि वे परीक्षा दुश्चिंता को कम कर सके। जहाँ तक पूर्व संचित ज्ञान एवं पूर्व में सम्पन्न हुए अनुसंधानों से यह ज्ञात होता है कि छत्तीगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल में अध्ययनरत विद्यार्थियों का अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका तुलनात्मक अध्ययन किसी और शोधार्थी द्वारा नहीं किया गया है। इसमें यही देखने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल की अपेक्षा केन्द्रीय शिक्षा मण्डल में पढ़ने वाले बच्चों के पैरेण्ट्स में अभिभावक सहभागिता ज्यादा देखी जाती है।

समस्या कथन

"छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिबावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"

प्रयुक्त पदों की परिभाषा

1. अभिभावक सहभागिता—अभिभावक की सहभागिता औपचारिक रूप से समुदाय संस्कृति, शिक्षा के क्षेत्र एवं विभिन्न क्षेत्रों की दक्षता के लिए बालक व बालिकाओं के प्रति एक अच्छा तालमेल बिठा कर समन्वयक रिश्ता स्थापित करना ही अभिभावक सहभागिता है।

2. परीक्षा दुश्चिंता—परीक्षा में घबराहट एवं मनोवैज्ञानिक अवस्था होती है जो कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी परीक्षण के पहले अत्यधिक तनाव, चिन्ता व असहजता का अनुभव किया जाता है। यह चिन्ता अधिगम व प्रदर्शन में महत्वपूर्ण बाधा के रूप में उत्पन्न होता है जो कि प्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक प्रदर्शन को कम करता है।

3. शैक्षिक उपलब्धि—शैक्षिक उपलब्धि महाविद्यालयों को परीक्षाओं से संदर्भित होता है। परीक्षाओं के अंतिम में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त कुल अंक जो कि महाविद्यालयों द्वारा अभिलेख के रूप में रखा जाता है व जिसके माध्यम से शैक्षणिक उपलब्धियों में महाविद्यालयों द्वारा चिन्तन किया जाता है।

4. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा—

अध्ययन के उद्देश्य—

1. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन है।
2. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना—

1. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pondri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

2. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

शोध विधि–सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी द्वारा आँकड़ों के संग्रहण हेतु बिलासपुर जिले के केन्द्रीय विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले समस्त छात्र जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किये गये हैं। इनमें से न्यादर्श हेतु केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के 15 विद्यालयों में से 300 विद्यार्थियों का साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध उपकरण–प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नानुसार शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है–

- **मधु अग्रवाल और वर्षा कौशल द्वारा निर्मित**–Students Examination Anxiety Test (SEAT)
- **विजय लक्ष्मी चौहान और गुंजन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित**–Parental Involvement Scale (PIS-CA)
- शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के अंकों का अध्ययन किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

सह-सम्बन्ध गुणांक = $r = \frac{\sum xy}{\sqrt{\sum x^2 \cdot \sum y^2}}$

परिकल्पना HOI–

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

समूह	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान	$\sum x^2$ और $\sum y^2$	$\sum xy$	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर	परिणाम
छ. ग. के छात्र-छात्राओं का अभिभावक भागिता	300	74.04	19287.52	413.52	0.023	0.05 = 0-088	धनात्मक सहसम्बन्ध
छ0ग0 के छात्र-छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि	300	65.52333	17478.52			0.01 = 0.115	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में चरों में मध्य सह-सम्बन्ध को ज्ञात करने हेतु कार्ल पियर्सन के गुणन-आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल के अन्तर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्रों (N = 600) की अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 74.04 तथा 65.52333 है तथा इनके मध्य का सह-सम्बन्ध गुणांक 0.023 है। Degree of Freedom (df) = 598 के लिए 'r' का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.115 है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.088 है। r के प्राप्त मान 'r' के सारणी मान से 0.01 तथा 0.05 दोनों ही स्तरों पर कम है। अतः शून्य परिकल्पना HO_1 "छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों के कक्षा

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध पाया जायेगा।'' स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध है।

परिकल्पना HO2

छत्तीगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा दुश्चिंता एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

समूह	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान	$\sum x^2$ और $\sum y^2$	$\sum xy$	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर	परिणाम
छ. ग. के छात्र-छात्राओं का परीक्षा दुश्चिंता	300	19.65	3486.25	2645.15	0.337	0.05 = 0-088	धनात्मक सहसम्बन्ध
छ0ग0 के छात्र-छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि	300	65.52333	17478.52			0.01 = 0.115	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में चरों के मध्य सह-सम्बन्ध को ज्ञात करने हेतु कार्ल पियर्सन के गुणन-आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा माध्यमिक के अन्तर्गत विद्यालयों ksakèe 10JeRVh{ vsJeusÚ¢SMM (N = 600) की परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 19.65 तथा 65.52333 है तथा इनके मध्य का सह-सम्बन्ध गुणांक 0.337 है। Degree of freedom (df) = 598 के लिए 'r' का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.088 है तथा 0.05 साथ7कता स्तर पर 0.115 है। r के प्राप्त मान 'r' के सारणी मान से 0.01 तथा 0.05 दोनों ही स्तरों पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना HO_2 ''छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।'' अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं हैं।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल में आने वाले कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं अभिभावक सहभागिता दोनों की ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)
Scanned with OKEN Scanner

उपसंहार

परीक्षा के समय अभिभावक विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में डर. भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़ापन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बालक तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ हद तक परीक्षा दुश्चिंता को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ-सूची

- भटनागर, डॉ. सुरेश एवं जोशी, डॉ. सुरेश : शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान
- Henry and Garret, Statistical Methods.
- चौहान, सुदीप कुमार; परासर, ज्योतीमा; शर्मा, कु. पुनम : बाल मनोविज्ञान एक अध्ययन
- Jackson, E. (2008) : Mathematics Anxiety in Students Teachers.
- लाल, रमन बिहारी एवं जोशी, सुरेश चन्द्र : शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

SOUVENIR

DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

INTERNATIONAL CONFERENCE

On

"Globalization of Teacher Education

21st & 22th July, 2018

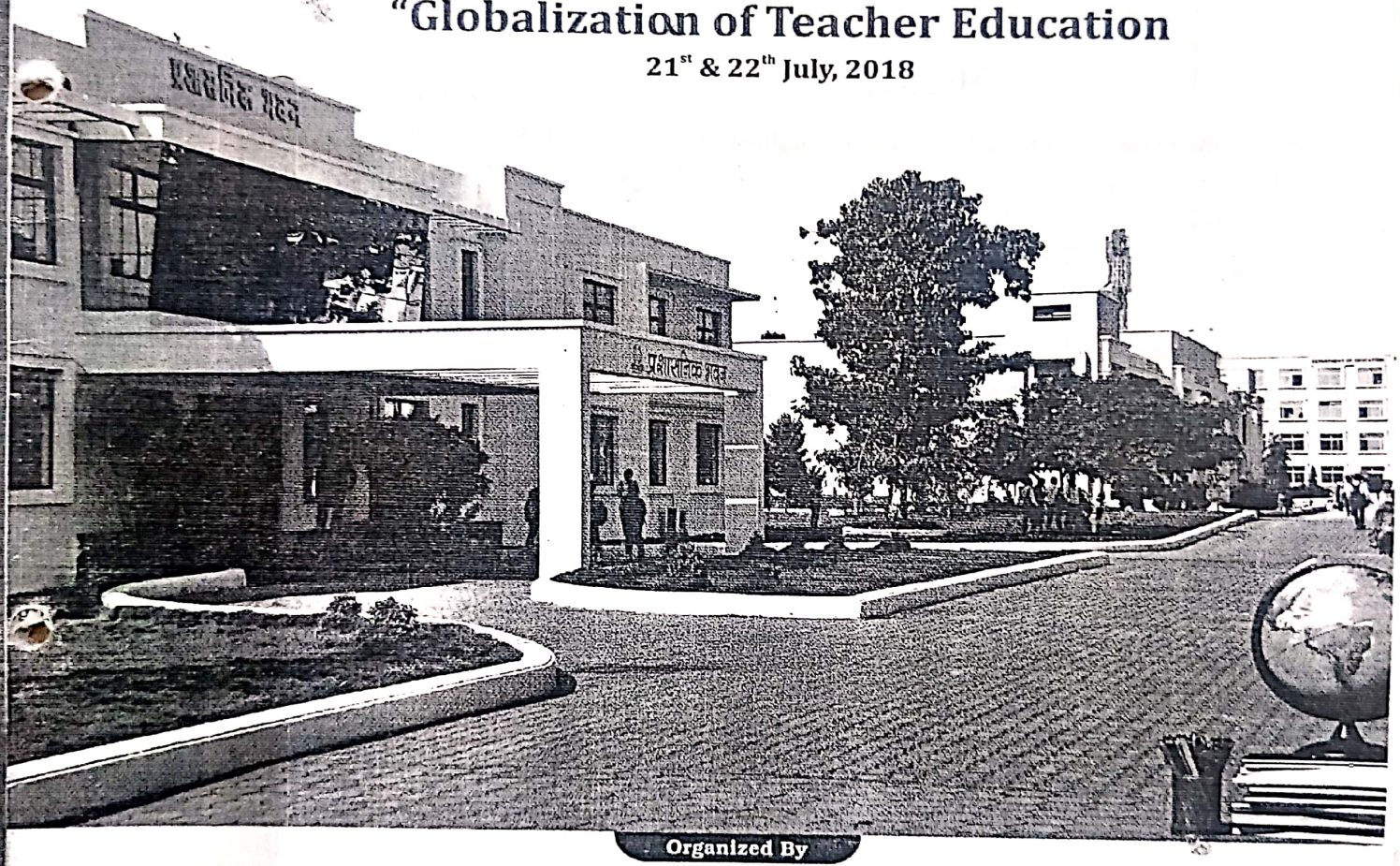

Organized By

Department of Education

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

In Association With

Council for Teacher Education (CTE)

Venue: Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.) www.cvru.ac

Principal
Department of Education
Sandipani [illegible]
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

53	The impact of ICT on Teacher Education at Present ...	Dr Sunil Kumar Sain	26
54	A Study on Need of ICT in Teacher Education	Srishti Tamrakar	27
55	Information and Communication Technologies	Sanjeevani Thakur	27
56	A Comparative Study among the Student -Teachers of	Manisha VijayVargiya	28
57	Global Role of Teacher Education	Sangeeta Yadav, Nand Kumar Singh	28
58	Personality Dimensions, Cognitive Differentiation and Gender ...	Sona Ram Verma	29
59	History of In-service Teacher Education in India	Dr. Saumnya Tiwari	29
60	Globalization and the Preparation of Quality Teacher	Smt. Bharti Kuldeep	30
61	Ethical and Moral Value of Teacher Education	Dr. Vibha Mishra, Shri Dhanlal Jaiswal	30
62	आईसीटी आधारित अध्यापक शिक्षा	Nayana Pahadiya	31
63	नवीन शिक्षण सीखने की प्रकिया	Sarika Sahu	31
64	वैश्वीय परिवर्तन का शिक्षक शिक्षा पर प्रभाव	रश्मि शुक्ला	32
65	भूमण्डलीकरण एव शिक्षको की व्यावसायिक सुदक्षता	डॉ. अनिता सिंह	33
66	डी एल एड प्रशिक्षण संस्थाओं का सम्पूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन	सत्य प्रकाश यादव,	33
67	शिक्षक शिक्षा मे शिक्षण प्रतिमानों के नवीन आयाम	डॉ. (श्रीमती) शोभा पुष्कर, शैलजा पवार	34
68	शिक्षक,शिक्षण एव आईसीटी	सरस्वती साहू	34
69	सेवारत् एवं सेवापूर्व– अध्यापक शिक्षा	Dr. Snehlata Nirmalkar	35
70	समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक की तैयारी	Mithalesh Singh Rajput	35
71	विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण का अध्ययन ...	प्रो. पी.के. नायक,, सीमा अग्रवाल	36
72	शिक्षक , शिक्षकीय प्रशिक्षण को बेहतर बनाने हेतु सरकार का प्रयास	अनिता यादव	37
73	सफल शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्माण कैसे किया जाए	सविता यादव	38
74	पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ	विजय कुमार गारुडिक, नीता गारुडिक	38
75	इटर्नशिप कार्यक्रम : भावी शिक्षकों को कार्यक्षम बनाने डाइट की भूमिका	प्रीति देशपांडे	39
76	सामाजिक विज्ञान विषय के अधिगम मे नाट्य विधि का प्रयोग एवं ...	छाया शर्मा	40
77	शिक्षा सभी के लिये	Neelima Gupta, Digree Lal Patel	41
78	शिक्षा के क्षेत्र मे आई. सी. टी. की भूमिका	प्रियंका चन्द्रा, विनय खाण्डेकर	41
79	वैश्विक परिदृश्य मे शिक्षा का लोकव्यापीकरण	प्रीति द्विवेदी	42
80	ICT based on current model in Teacher education	Vidya Bhushan Sharma	43
81	भावी शिक्षकों की आर्थिक साक्षरता स्तर पर सम्बंधित शोध साहित्यों ...	धर्मबीर पटेल	43
82	शिक्षक शिक्षा पर वैश्विक परिवर्तन का प्रभाव	Vijay Kumar Sahu	44
83	Innovative teaching learning process	ममता सोनेश्वर	45
84	वैश्वीकरण और शिक्षक शिक्षा	खुशबू राठौर	45
85	भूगोल शिक्षण मे सूचना एव संचार प्रौद्योगिकी	काजल मोइत्राए मंजूषा साहू	46
86	वैश्विक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में सरकार एवं अन्य	भूमिका देवाँगन	46
87	वैश्विक सदर्भ मे शिक्षक शिक्षा में नवाचार	ज्योति सक्सेना	47
88	शिक्षक प्रशिक्षण मूलत: निरंतरता, परिवर्तन एवं कौशलो का समागम	दीप्ति सिंह राठौर	48
89	वैश्विक प्रवृत्ति मे अध्यापक शिक्षा	राहुल कुमार तिवारी, कुलजीत सिंह	49
90	वर्तमान समय मे नवाचारी शिक्षण का स्थान–भारत के सन्दर्भ में	Kavita Biswas	49
91	प्रारंभिक भाषा शिक्षण सिद्धांतों से कक्षा तक	हीराधर सिन्हा	50
92	शिक्षक शिक्षा पर वैश्विक परिवर्तनो का प्रभाव	डॉ. अरविन्द कुमार यादव, सुनील यादव	50
93	" व्यवहारिक ज्ञान के सदर्भ मे इन्टरशिप कार्यक्रम की भूमिका "	मंजू भट्ट	50
94	शिक्षक–शिक्षा के नैतिक और नैतिक मूल्य	सुशील कुमार श्रीवास	51
95	शिक्षक शिक्षा मे वैश्विक रुझान एव समस्याएँ	राखी शर्मा	52
96	शिक्षा मे नवाचार	सीमांचल त्रिपाठी	53
97	प्राचीन एवम् आधुनिक शिक्षा एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. महेश कुमार शुक्ल, अतुल कुमार मिश्र	54
98	"आधुनिकता एवम् शिक्षा का पारस्परिक सम्बन्ध"	अभिषेक अग्रवाल, विपिन तिकी	54
99	प्राचीन कालीन एव बौद्धकालीन शिक्षा	नवीन कुमार श्रीवास्तव	55
100	शिक्षा मे नवाचार	अन्नामलिका	56
101	ICT Based Teacher Education	ईश्वरी कुमार सिन्हा	56
102	उच्च शिक्षा मे आई सी टी का प्रयोग एव महत्व	कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ. रामरतन साहू	57
103	शैक्षणिक वैश्वीकरण मे भ्रष्टाचार की प्रभाविता	रूदेश कुमार पाण्डेय	58
104	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य	दुर्गावती मिश्रा, डॉ. प्रमोद कुमार नायक	58

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक प्रशिक्षण मूलतः निरंतरता, परिवर्तन एवं कौशलो का समागम

दीप्ति सिंह राठौर
सहा. प्राध्यापक संदीपनी एकेडमी मस्तुरी बिलासपुर

परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं। चेहरे बदलते हैं, लोग बदलते हैं, समाज बदलता हैं उनकी सोच–विचार बदलती हैं। यह विचार विष्व के समाजों को, उनकी आधार और परम्पराओं को बदलते हैं। इस परिवर्तनीय दुनिया की आने वाली पीढ़ी, वर्तमान पीढ़ी से अलग है और वर्तमान पीढ़ी बीत गई पीढ़ी से स्पष्ट है परिवर्तन का यह दौर अबधागति से चलता रहता है क्योंकि प्रकृति का एक और नियम है निरंतरता।

वर्तमान की षिक्षा पद्धति भी आने वाले नवीन ऊर्जा एवं नई सोच का स्वागत शिक्षा में नवीनता ला कर करती हैं। इस नई सोच व नई पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए आवष्यक है की शिक्षक प्रशिक्षण में भी नवीनता आए। वैसे तो अध्यापन कार्य समस्त कार्यों में पवित्रतम और परमावष्यक माना जाता है षिक्षक प्रक्रिया निश्चित रूप से अध्यापन शिक्षा पर निर्भर है यह एक शैक्षिक आयोजन हैं। प्रत्येक अध्यापक के लिए प्रषिक्षण अति आवष्यक हैं। अप्रशिक्षित अध्यापक की तुलना में प्रशिक्षित अध्यापक अधिक प्रभावी सिद्ध होता हैं। शिक्षक प्रशिक्षक का आधार पाठ्यक्रम है एवं शिक्षक उसका निर्देशकर्ता।

षिक्षक प्रशिक्षण का गुण केवल विषय में निपुणता होना ही नहीं, सूचनाओं का प्रभावी ढंग से छात्रों तक प्रेषण ज्ञान, अभिवृत्ति के साथ कई कौशलों पर निर्भर करती हैं इसलिए शिक्षक प्रषिक्षण के लिए तीन वस्तुए आवश्यक है ज्ञान, अभिवृत्ति एवं कौशल। ज्ञान केवल विषय सम्बन्धी या पुस्तक सम्बन्धी न होकर व्यवहारिक हो जो शिक्षा एवं भावी जीवन के दायित्वों एवं कर्तव्यों को ग्रहण एवं वहन करने में सक्षम बनाए। अभिवृत्ति ऐसी हो जिससे एक अनुभवी अपने अनुभव की सहायता से अनुभवहीनता को दूर कर नवीन अनुभवों से जोड़े और स्वयं जुड़े भी। ज्ञान एवं अनुभव ही कौशल के आधार है यह कौशल कुछ जन्मजात, बहुत सारा प्रशिक्षण एवं अभ्यास के बाद विकसित होता हैं। यह अभ्यास ही तकनीकों में सक्षम बनने में सहायक हैं।

इसलिए आवश्यक है कि शिक्षण प्रशिक्षण में कौशलों, लक्ष्यों, सिद्धांत एवं उद्देश्य में समय के साथ परिवर्तन आए। शिक्षक प्रशिक्षण का यह परिवर्तन इतना सकारात्मक हो कि उनसे शिक्षित होती नई पीढ़ी जब पूर्ण शिक्षित हो तब वह अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य की ऊंचाईयों को छूने में झिझके न। ये कौशल ही तो है जो व्यक्ति के कवच का कम करती है जिससे वह लड़खड़ाते तो है परन्तु रूकते नहीं, ठहरते नहीं।

***

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक बिहार का सृजन: एक ऐतिहासिक विश्लेषण–प्रो० (डॉ०) अर्चना कुमारी साह 1902
धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में 'परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति'–आलोक कुमार 1906
विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिरुचि का अध्ययन–डॉ० क्षमा पाण्डेय; डॉ० नीरज कुमार 1909
भारतीय चित्रकला के प्रारम्भिक स्वरूप एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन–डॉ० अरविन्द कुमार यादव 1913
संयुक्त परिवार पर आधुनिकीकरण का प्रभाव–संतोष विश्वकर्मा 1916
"उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन एवं परीक्षा संबंधी चिंता का अध्ययन"–दीप्ति सिंह राठौर 1919

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

"उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन एवं परीक्षा संबंधी चिंता का अध्ययन"

दीप्ति सिंह राठौर

सहायक प्राध्यापक, सांदीपनी एकेडमी, पेन्ड्री (मस्तूरी), जिला- बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन एवं परीक्षा संबंधी चिंता को जानने के लिए किया गया है। शोध हेतु राज्य छत्तीसगढ़ के जिला-बिलासपुर के दो विकासखण्ड मस्तूरी और बिल्हा के 100 उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों का चयन उद्देश्य पूर्ण न्यायदर्श विधि द्वारा किया गया है। विद्यार्थियों के शालेय समायोजन को जानने के लिए आंकड़ो के संग्रह हेतु डॉ. ए0के0 सिन्हा व डॉ. आर0पी0 सिंह (1984) द्वारा निर्मित समायोजन वस्तू सूची और डॉ. मधु अग्रवाल तथा वर्षा कौशल (1985) द्वारा निर्मित विद्यार्थी परीक्षा चिंता मापनी का प्रयोग किया गया है। उपकरणों से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और CR का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण के बाद यह पाया गया कि प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया साथ ही विशिष्ट विद्यार्थियों की परीक्षा संबंधी चिंता में भी अंतर नही पाया गया। परिणाम में यह पाया गया कि पिछड़े बालक मानसिक अस्थिरता और कुसमायोजन के कारण शालेय कार्यो में पिछड़े रहते है इसके विपरीत प्रतिभाशाली बालक स्थिर संवेग, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन बनाएं रखे हैं।

की वर्ड- परीक्षा संबंधी चिंता, विशिष्ट बालक, शालेय समायोजन।

प्रस्तावना-

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों की जन्मजात् शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है। यह योगदान समान रूप से सभी विद्यार्थियों को दिया जाता है परन्तु अपनी-अपनी योग्यतानुसार या व्यक्तित्वनुसार विद्यार्थी शिक्षा को ग्रहण करता है। विद्यार्थियों का स्तर भी उनके शारीरिक, सामाजिक या मानसिक रूप से अलग-अलग होता है। ऐसे विद्यार्थी जो सामान्य विद्यार्थियों से किन्ही बातों पर भिन्न होते हैं वे विशिष्ट बालको की श्रेणी में आते Gsa विशिष्ट बालकों से तात्पर्य ऐसे बालको से है जिनकी बुद्धि तीव्र या मंद होती है इसमें भी कई प्रकार होते है जो सांवेगीक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से भिन्न-भिन्न होते है जो इस प्रकार से है-

सांवेगिक रूप से विशिष्ट बालक के प्रकार-

- समस्यात्मक बालक
- अपराधी बालक
- कुसमायोजक बालक

शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक के प्रकार

- विकलांग बालक
- गव्यात्मक अक्षम बालक

मानसिक रूप से विशिष्ट बालक के प्रकार

- प्रतिभाशाली
- पिछड़े बालक
- मंदबुद्धि बालक

विशिष्ट बालक को समझाते हुए को व को कहा है कि "वह बालक जो मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और संवेगात्मक आदि विशेषताओं से विशिष्ट हो और यह विशिष्टता इस स्तर की हो कि उसे अपनी विकास क्षमता की उच्चतम सीमा तक पहुँचने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता हो, असाधारण या विशिष्ट बालक कहलाता है।" इस प्रकार कई स्तरो में विशिष्ट बालक शिक्षा कार्य में अपने व्यक्तित्वानुसार कार्य करते हैं इनमें सबसे प्रमुख है प्रतिभाशाली

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

एवं पिछड़े बालक। सामान्य विद्यालयों में सामान्य कक्षाओ में सामान्य रूप से औसत या सामान्य बालक / विद्यार्थियो को हटा दिया जाए तो विशिष्ट बालको के यह दोनो रूप लगभग प्रत्येक विद्यालयों में जिल जाएगें।

प्रतिभाशाली बालक-

प्रतिभाशाली बालक वे विद्यार्थी होते हैं जिनकी बौद्धिक क्षमताएं सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होता है टरमेन के अनुसार ऐसे बालको की बुद्धिलब्धि 140 से ऊपर होती है जबकि मिल के अनुसार 190-200 बुद्धि लब्धि वाले बालक प्रतिभाशाली होते हैं। हैविंगहर्स्ट ने इस बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि "प्रतिभाशाली बालक वे है जो समाज के किसी भी कार्यक्षेत्र में निरन्तर कार्यकुशलता का परिचय देते हैं।"

पिछड़े बालक-

पिछड़े बालक वह विद्यार्थी होते है जो कक्षा में किसी तथ्य को बार-बार समझाने पर भी नही समझते यह औसत विद्यार्थियों के समान प्रगति नहीं कर पाते हैं। ऐसे विद्यार्थी पाठ्यक्रत तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओ में किसी प्रकार की रूचि नहीं लेते हैं। बर्ट के अनुसार "एक पिछड़ा बालक वह है जो अपने शाला जीवन के मध्यकाल में अपनी कक्षा से नीचे की कक्षा का काम नही कर सकते जो कि उसकी आयु के लिए सामान्य कार्य हो।" विद्यार्थियों में पिछड़ेपन के कई कारण होते हैं जैसे शारीरिक दोष का होना, मानसिक दृष्टि से कमजोर होना, संवेगात्मक रूप से कमजोर होना, शिक्षा का अभाव होना आदि। इन सभी कारणो को निदान द्वारा हि दूर या कम किया जा सकता है।

शालेय समायोजन-

शालेय समायोजन अर्थात कोई विद्यार्थी अपने शाला में शैक्षिक, सांस्कृति आदि कार्य व गतिविधियो के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन संयम रूप से करना। हेरियोस (2004) ने विद्यालय में समायोजन पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि "शाला में समायोजन एक मुख्य प्रक्रिया के रूप में होता है जो कि आंतरिक योग्यता और पूर्व अधिगम, पारिवारिक विशेषताये जो उसके व्यवहार को पर्यावरणीय विशेषताये, जो उसके व्यवहार को संचालित करती है, उसका स्वभाव और गुण मे सभी बाते बच्चे को एक अच्छा समायोजित बालक सिद्ध करती है।" इस प्रकार कहा जा सकता है की शालेय समायोजन विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक कार्यो के साथ शिक्षक व सहपाठीयो के साथ भी सामंजस्य बनाते हुए रहता है।

परीक्षा संबंधी चिन्ता-

चिन्ता को एक प्रकार का मानसिक स्वास्थ्य में विकास माना जाता है जो भय, आशंका और अत्यधिक रूप से घबराहट को बढ़ाने का काम करता है। वैसे तो चिंता शरीर की एक सामान्य प्रक्रिया जब व्यक्ति अत्यधिक तनाव में होता है। चिंता रहने की समय-सीमा कम हो तो वह सामान्य कहा जा सकता परन्तु लम्बे समय यह समस्या है तो यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और यह मानसिक समस्याओं को बढ़ावा देते हैं। चिंता कई तरह के होता है परन्तु विद्यार्थी जीवन में परीक्षा संबंधी विन्ता सबसे बड़ी होती है। परीक्षा की तैयारी में अधुरापन परीक्षा चिन्ता को बढ़ाता है।

शोध के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोधपत्र में चरों के आधार पर निम्न उद्देश्य बनाए गये हैं-

1 उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन का अध्ययन करना।

2 उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के परीक्षा संबंधी चिंता का अध्ययन करना।

परिकल्पना-

H_{01}- उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

H_{02}- उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के परीक्षा संबंधी चिंता में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

परिसीमन-

1 प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के 2 विकासरखंड बिल्हा व मस्तुरी तक सीमित है।

2 प्रस्तुत शोध पत्र बिल्हा व मस्तुरी विकासखण्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं कक्ष के विद्यार्थीयो तक सीमित हैं।

3 प्रस्तुत शोध पत्र विद्यार्थियों के शालेय समायोजन एवं परीक्षा संबंधी चिंता तक सीमित है।

शोध अभिकल्प:-

- न्यादर्श- प्रस्तुत शोध पत्र में जिला - बिलासपुर के बिल्हा व मस्तुरी विकासखण्ड के 11वीं कक्षा के 100 विद्यार्थियो का का चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।
- उपकरण- प्रस्तुत शोध-पत्र में दो उपकरण विधियों का प्रयोग किया गया है -

1. AISS - Adjustment Inventory for School Student-

डॉ. ए. के. सिन्हा एवं डॉ आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन वस्तु सूची (1984) का प्रयोग समायोजन एवं उसके तीन क्षेत्र सांवेगिक, शैक्षिक व सामाजिक समायोजन को मापने के लिए किया गया है। जिसमें 20-20 प्रश्नों के 3 सेट है अर्थात कुल 60 प्रश्न है जिसमें हॉ या नही दो सम्भावित उत्तर दीये गये है। जिसमें हॉ पर 1 एवं नही पर शून्य अंक दिया जायेगा। प्राप्त अंको के योग को आँकड़ों के रूप में प्रयोग किया गया।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

2. SEAt- Student's Examination Anxiety Test-

डॉ. मधु अग्रवाल तथा वर्षा कौशल द्वारा निर्मित विद्यार्थी परीक्षा चिंता मापनी (1985) का प्रयोग परीक्षा संबधि चिंता को जानने के लिए किया गया। जिसमे 38 कथन है जिसके 2 विकल्प हॉ या नहीं है प्राप्त अनुक्रिया में हॉ पर 1 व नहीं पर शून्य अंक देते हुए कुल योग निकाल कर अंको का साख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय-

प्रस्तुत शोध पत्र मे उपकरण से प्राप्त आंकड़ो के विश्लेषण हेतू मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं CR का प्रयोग कर सार्थकता की जांच किया गया।

परिकल्पनाओ का परीक्षण एवं विश्लेषण-

प्रथम परिकल्पना-

H_{01}- "उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 1 में प्रदर्शित है।

तालिका क्रमांक 01

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	क्रांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभाशाली बालक	50	10.46	4.66	6.81	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{01} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	17.34	5.41				

विश्लेषण-

उपरोक्त तालिका 03 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M1 = 10.46 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1 1) SD_1 = 4.66 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M2 = 17.34 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1 1) SD_2 = 5.41 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 6.81 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है। अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं।

द्वितीय परिकल्पना-

H_{02}- उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के परीक्षा संबंधी चिंता में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित है।

तालिका क्रमांक 02

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	क्रांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभाशाली बालक	50	12.03	7.05	5.19	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{02} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	19.02	6.06				

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

विश्लेषण-

उपरोक्त तालिका 03 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M1 = 12.03 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 7.05 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M2 = 19.02 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 6.06 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 5.19 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं।

परिणाम एवं विवेचना-

H_{01}- "उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

परिणाम - H_{01} परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

विवेचना-

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक मानसिक अस्थिरता, भद्र व्यवहार तथा पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में कुसमायोजन या असफलता को प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालको की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों के निम्न प्राप्तांक स्थिर संवेग, श्रेष्ठ सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक शालेय समायोजन में सफलता को दर्शाता है।

H_{02}- "उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के परीक्षा संबंधी चिंता में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।"

परिणाम- H_{02} परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

विवेचना-

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछडे बालकों की परीक्षा संबंधी चिंता में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक अधिक चिंता को दर्शाता करता है जो असफलता के कारण होता तथा उन्हे परामर्श व मनोवैज्ञानिक सहायता देनी चाहिए। पिछड़े बालको की तुलना में प्रतिभाशाली बालको के निम्न प्राप्तांक कम चिंता को दर्शाता है जो अभिप्रेरणा अधीन के सूचक है।

संदर्भग्रंथ

- बपिंदर, एम. (1985): "दिल्ली छात्रों के सामान्य चिंता और परीक्षण चिंता का वातावर्णीय कारक और बहिर्मुखी - अंतर्मुखी के संदर्भ में अध्ययन।" Fourth Survey of Research in Education (1983 - 1988) Vol-1 पृष्ठ के 337.
- हुसैन, एम. क्यू. (1977): "आकांक्षा और चिंता स्तर के संबंध में आकादमिक प्राप्ति का एक अध्ययन" Third Survey of Research in Education (1978-1983), पृष्ठ क्र. 667
- लाल, प्रो. रमन बिहारी एवं जोशी, डॉ. सुरेश, चन्द्र (2009): "शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ क्र.- 399.
- पाठक, पी.डी. (2009): "शिक्षा मनोविज्ञान", अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ क्र. 530, 531, 539.
- रॉडगर (2007): "एक अध्ययन में अभिक्षमता शिक्षणस्पष्टता (Teaching Clearity) और परिक्षा चिंता (Test Anxiety) का उपलब्धि", http:èkèkwww-google-com
- रविंदर (1977): "अधिगम और अकादमी उपलब्धि पर चिंता गुण स्थिति, मनोवैज्ञानिक दबाव (प्रतिबल) और बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन", Third Survey of Research in Education (1978-1983), पृष्ठ क्र. 683.
- शर्मा, आर. ए. (2009): "शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी, इंटरलेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृष्ठ दृ 155, 174, 198, 202, 218, 220, 552.
- शर्मा, श्रीमती आर. के. एवं दुबे, श्रीकृष्णा, बरोलिया, श्रीमती डॉ. ए. (नीवन संस्करण): "शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार", राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, पृष्ठ क्र. - 247, 248, 260.
- सरीन, डॉ. श्रीमती शशिकला एवं सरीन, डॉ. अंजनी (चतुर्थ संस्करण): "शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ 58.-56.
- श्रीवास्तव, के.के. (1978): "बस्ती जिले के किशोरी बालिका, छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक चिंता के प्रभाव का अध्ययन", Third Survey of Research in Education (1978-1983), पृष्ठ क्र. 694.
- सिंह, अरूण कुमार (2009): "शिक्षा मनोविज्ञान", भारती भवन पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ- 534, 535, 536, 555.
- सिंह, अरूण कुमार (2009): "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ", मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृष्ठ क्र. 125.
- सुलेमान, डॉ. मुहम्मद एवं तौवान, डॉ. मुहम्मद (2004): "असामान्य मनोविज्ञान विषय और वयाख्या", नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड दिल्ली, पृष्ठ क्र. 219, 220, 221, 222, 224.
- वर्मा, डॉ. प्रीति एवं श्रीवास्तव, डॉ. डी. एन.: "मनोविज्ञान और शिक्षा के सांख्यिकी", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ क्र. 51,54,131,331,135.
- वत्स, ए. (1980): "विद्वता उपलब्धि, उपलब्धि-अभिप्रेरणा, सृजनशील क्रिया और चिंता के जैव-रासायनिक सह-संबंध का अध्ययन", Third Survey of Research in Education (1978-1983), पृष्ठ क्र. 696.

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Bandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol 9 Issue4, August-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

"दीपशिखा" के अंशों में महादेवी वर्मा की साहित्यिक चेतना का अवलोकन

रेणु साहू
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा
सांदीपनी एकेडमी आछोटी, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)

भूमिका–

महादेवी वर्मा ने कविता के अलावा सशक्त गद्य भी लिखा था। उनकी गद्य रचनाएँ भाषा और विचार की दृष्टि से अत्यंत परिपक्व मानी जाती हैं। श्रृंखला की कड़ियाँ' के लेखों में उन्होंने स्त्री–मुक्ति के प्रश्नों को जिस स्तर पर उठाया था वह आश्चर्यजनक है। मैनेजर पाण्डेय ने इस पुस्तक की विषयवस्तु को रेखांकित करते हुए महादेवी वर्मा के लेखन की ऐतिहासिकता के संदर्भ में अपना विचार स्पष्ट किया है कि सिमोन द बोउवार की पुस्तक 'द सेकेण्ड सेक्स' के प्रकाशन से भी पहले महादेवी की यह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी और इसके लेख तो और भी पहले प्रकाशित हो चुके थे। महादेवी वर्मा ने 'चाँद' पत्रिका के 'विदुषी अंक' का सम्पादन 1935 में किया था। यह अंक हिंदी साहित्य जगत में हुए स्त्री–विमर्श की परम्परा में विशेष महत्त्व रखता है। यह अंक उस जमाने में आया था जब इस तरह के विषय पर सोच–विचार की प्रवृत्ति आम नहीं थी। महादेवी का वैचारिक गद्य लेखन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

"दीपशिखा" महादेवी वर्मा जी की अत्यन्त प्रसिद्ध चित्र–गीतात्मक पुस्तक है जिसमें महादेवीजी ने अपनी कवितायें अपने बनाये चित्रों पर स्वयम् लिखी थीं। यह काव्य संग्रह 1942 में प्रकाशित हुआ था। इसमें कुल इक्यावन कविताएँ हैं। प्रत्येक गीत में विशेष भाव निहित है जिसकी रचना चित्रात्मक शैली में है। जो स्थान महाकाव्यों में प्रसादजी की 'कामायनी' एवम् प्रबंधात्मक कविताओं में निरालाजी की 'राम की शक्ति पूजा' को प्राप्त है, वही स्थान आधुनिक गीतिकाव्य में 'दीपशिखा' को प्राप्त है। दीपशिखा महादेवी वर्मा जी द्वारा लिखित पाँचवाँ कविता–संग्रह है। इसका प्रारंभिक प्रकाशन 1942 में हुआ। इस प्रकाशित श्रृंखला में 1936 से 1942 ई० तक के गीतों का संकलन है जिसका प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया है।

R.Singh
Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

दीपशिखा में महादेवी वर्मा के निहित भाव–

दीपशिखा काव्यशृंखला का मुख्य प्रतिपाद्य स्वयं मिटकर दूसरे को सुखी बनाना है। इस संग्रह की भूमिका में वे स्वयं कहती हैं– 'दीप-शिखा में मेरी कुछ ऐसी रचनाएँ संग्रहित हैं जिन्हें मैंने रंगरेखा की धुंधली पृष्ठभूमि देने का प्रयास किया है। सभी रचनाओं को ऐसी पीठिका देना न सम्भव होता है और न रुचिकर, अतः रचनाक्रम की दृष्टि से यह चित्रगीत बहुत बिखरे हुए ही रहेंगे।' और मेरे गीत अध्यात्म के अमूर्त आकाश के नीचे लोक–गीतों की धरती पर पले हैं।

साहित्य चेतना–

महादेवी के गीतों का अधिकारिक विषय 'प्रेम' है। पर प्रेम की सार्थकता उन्होंने मिलन के उल्लासपूर्ण क्षणों से अधिक विरह की अन्तश्चेतनामूलक पीड़ा में तलाश की। मिलन के चित्र उनके चित्र उनके गीतों में आकांक्षित और संभावित, अतः कल्पनाश्रित ही हो सकते थे, पर विरहानुभूति को भी उन्होंने सूक्ष्म, निगूढ़ प्रतीकों और धुंधले बिंबों के माध्यम से ही अधिक अंकित किया।

उनके प्रतीकों का विश्लेषण करते हुए अज्ञेय ने कहाः 'उन्हें तो वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भी देनी थी और सामाजिक शिष्टाचार तथा रूढ़ बंधनों की मर्यादा भी निभानी थी। यही भाव उन्हें प्रतीकों का आश्रय लेने पर बाध्य करता है।' महादेवी के गीतों में ऐसे बिम्बों की बहुतायत है जो दृष्यरूप या चित्र खड़े करने की बजाय सूक्ष्म संवेदन अधिक जगाते हैं, 'रजत् रश्मियों की छाया में धूमिल घन–सा वह आता' जैसी पंक्तियों में 'वह' को प्रकट करने की अपेक्षा धुंधलाने का प्रयास अधिक दिखाई देता है।

छायावाद और रहस्यवाद की कवि के रूप में महादेवी वर्मा का स्थान अक्षुण्ण है। उनके पाँच काव्य–संग्रहों की कविताओं में छायावादी तथा रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ तो हैं ही, उनमें स्त्री की पीड़ा और मुक्ति के प्रसंग भरे पड़े हैं। इनमें पीड़ा का विवरण भी व्यक्तित्व की दृढ़ता को व्यक्त करने के लिए किया गया है। इनमें प्रेम और प्रेमी का जिक्र भी मु[illegible] के प्रतीक के रूप में किया गया है। महादेवी कोरी भावुकता की कविताएँ नहीं लिखती हैं। उनकी कविताओं में वैचारिक दृढ़ता हमेशा बनी रही।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol.9 Issue4, August-2019
ISSN(o) 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

"दीपशिखा" से उद्धृत काव्यांश–

पंथ होने दो अपरिचित, प्राण रहने दो अकेला,
घेर ले आया अमा बन आज कज्जल–अश्रुओं में रिमझिम ले यह घिरा घन,
और होंगे नयन सूखे, तिलक बुझे औ पलक रूखे,
आर्द्र चितवन में यहां, शत विद्युतों में दीप खेला।
अन्य होंगे चरण हारे, और हैं जो लौटते दे, शूल को संकल्प सारे,
दुखव्रती निर्माण–उन्मद, यह अमरता नापते पद,
बाँध देंगे अंक–संसृति से तिमिर में स्वर्ण बेला।
दूसरी होगी कहानी, शून्य में जिसके मिटे स्वर, धूलि में खोई निशानी,
आज जिस पर प्रलय विस्मृत, मैं लगती चल रही नित,
मोतियों की हाट औ, चिनगारियों का एक मेला।
हास का मधु–दूत भेजो, रोष की भरू–भंगिमा, पतझर को चाहे सहे जो।
ले मिलेगा उर अचंचल, वेदना–जल स्वप्न–शतदल,
जान लो, वह मिलन–एकाकी, विरह में है दुकेला।

उपरोक्त बंद 'पंथ होने दो अपरिचित' शीर्षक कविता गीत 'दीप शिखा' (1942) में संगृहीत महादेवी वर्मा द्वारा रचित काव्यांश है। 'दीप– शिखा' की कविताओं में महादेवी की वैचारिक दृढ़ता पहले की तुलना में और भी बढ़ी हुई दिखाई पड़ती है। उनका यह मत है कि चाहे जो हो जाए, हमें अपने काम और अपनी वैचारिकी पर दृढ़ होना चाहिए । इस कविता में महादेवी कहती हैं कि मैं जिस रास्ते पर चलना चाहती हूँ वह मेरे लिए नया हो सकता है, अपरिचित हो सकता है, उस रास्ते की कठिनाइयों का अनुमान मुझे नहीं भी हो सकता है। यह भी हो सकता है कि इस यात्रा में मेरी सहायता करनेवाला कोई न हो! संभव है कि मेरा सहारा केवल मेरा आत्मबल हो! तब भी कोई बात नहीं! महादेवी पूरे विश्वास के साथ कहती हैं कि पंथ को अपरिचित होने दो और मेरे प्राणों को अकेला रहने दो! मैं पीछे नहीं हटूंगी। यह

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol 9 Issue 4, August 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कविता दूसरा अर्थ रखती है । एक अर्थ है रथी के संघर्ष से सम्बन्धित और दूसरा अर्थ है प्रिय पथ पर चलने की कठिनाइयों से संघर्ष ।

इस कविता में दो पक्ष हैं रास्ते में आनेवाली कठिनाइयाँ और अपनी हिम्मत का महादेवी कहती हैं कि यदि मेरी छाया अमावस्या की काली रात बनकर घेर ले, घिरे हुए बादलों से ऐसी बारिश हो मानो निर्मल आँसू बरस रहे हों! फिर भी मैं हार नहीं मानूँगी। वे दूसरों की आँखें होंगी, जो विषम परिस्थितियों में दुखी होकर सूख जाती होंगी, उन आँखों के गोलक बुझ जाते होंगे, उनकी पलकें रूखी हो जाती होंगी! मेरी हिम्मत तो यह है कि डबडबाई आँखों में भी मैंने निगाहों की चमक बनाए रखी है, जैसे बरसते हुए आसमान में सैकड़ों बिजलियाँ ऐसे चमकती हैं मानो लगातार दीप जल रहे हों।

वे दूसरे ढंग के लोग होंगे जिनके कदम इन परेशानियों के कारण हार मान लेते होंगे। वे दूसरे ढंग के लोग हैं जो रास्ते के काँटों को अपने संकल्प सौंप कर हारे हुए की तरह लौट जाते होंगे। मेरे पाँव अमरत्व की यात्रा कर रहे हैं। वे मृत्यु के भय से मुक्त हैं। उन्होंने दुःख को व्रत की तरह स्वीकार कर लिया है। वे निर्माण के प्रति उन्माद के स्तर तक का संकल्प ले चुके हैं। आशय यह है कि मैं हार नहीं मानूँगी। मेरे कदम सृष्टि की गोद में फैले हुए अँधेरे के बीच सुनहला सबेरा उत्पन्न कर देंगे ।

पराजय की वह कहानी दूसरे ढंग की होगी, जहाँ संघर्ष करनेवालों की आवाज शून्य में समाकर मिट गयी होगी और उनकी प्रत्येक निशानी धूल में खो गयी होगी। मगर मेरे साथ यह सब नहीं हो सकता। मैं मोतियों की हाट और चिंगारियों का मेला लगा रही हूँ । आशय यह है कि मैं आँसुओं को क्रांति के रूप में ढाल देना चाहती हूँ । इसलिए आज इस हाट और मेला पर प्रलय भी विस्मित हो गया है। जो प्रलय मुझे मिटाने आया था, वह मेरी हिम्मत देखकर आश्चर्य से भर गया है।

कविता के अंत में महादेवी मानो अपने अज्ञात और अनंत प्रियतम को सम्बोधित करते हुए कहती हैं कि तुम चाहे प्रसन्न रहनेवाले वसंत को दूत बनाकर मेरे पास भेजो या भौंह चढ़ाकर रोष प्रकट करनेवाले पतझड़ को ! मेरा हृदय सब कुछ सह लेगा। मेरा हृदय अचंचल रहकर, अपने दुःख के आँसुओं और कमल की तरह सुंदर सपनों को लेकर तुमसे मिलेगा। एक बात तय है कि वह मिलन मुझे अकेला कर देगा, क्योंकि संघर्ष की जिन प्रेरणाओं ने मेरे व्यक्तित्व का निर्माण किया है उन सबकी पूर्णाहुति इस मिलन में हो जाएगी।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol.9 Issue4, August-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

वह मिलन मेरे – तुम्हारे द्वैत को समाप्त कर देगा । द्वैत की समाप्ति मानो हमारे अस्तित्व–व्यक्तित्व को घुला–मिला लेने के समान है। इस तरह वह मिलन मुझे एकाकी हो जाने का एहसास कराएगा, जबकि विरह की स्थिति में मुझे एहसास है कि तुम भी हो और मैं भी हूँ। मेरे लिए मिलन में एकाकी हो जाने का भाव है और विरह में दोनों के अस्तित्ववान होने का भाव !

भाव्यगत विशेषता–

चाहे जो हो जाए हमें अपने काम और अपनी वैचारिकी पर दृढ़ होना चाहिए। यह कविता दुहरा अर्थ रखती है। एक अर्थ है स्त्री के संघर्ष से सम्बन्धित और दूसरा अर्थ है प्रिय–पथ पर चलने की कठिनाइयों से संघर्ष। इस कविता में महादेवी मानो अपने अज्ञात और अनंत प्रियतम को भी सम्बोधित कर रही हैं। 28 और 14 मात्राओं की पंक्तियों से इस कविता का निर्माण हुआ है।

यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो
रजत शंख घड़ियाल स्वर्ण वंशी–वीणा–स्वर,
गये आरती बेला को शत–शत लय से भर,
जब था कल कंठो का मेला,
विहंसे उपल तिमिर था खेला,
अब मन्दिर में इष्ट अकेला,
इसे अजिर का शून्य गलाने को गलने दो!
चरणों से चिह्नित अलिन्द की भूमि सुनहली,
प्रणत शिरों के अंक लिये चन्दन की दहली,
झर सुमन बिखरे अक्षत सित,
धूप–अर्घ्य नैवेद्य अपरिमित

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol.9 Issue4, August-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तम में सब होंगे अन्तर्हित,
सबकी अर्चित कथा इसी लौ में पलने दो!
पल के मनके फेर पुजारी विश्व सो गया,
प्रतिध्वनि का इतिहास प्रस्तरों बीच खो गया,
सांसों की समाधि सा जीवन,
मसि–सागर का पंथ गया बन
रुका मुखर कण–कण स्पंदन,
इस ज्वाला में प्राण–रूप फिर से ढलने दो!
झंझा है दिग्भ्रान्त रात की मूर्छा गहरी
आज पुजारी बने, ज्योति का यह लघु प्रहरी,
जब तक लौटे दिन की हलचल,
तब तक यह जागेगा प्रतिपल,
रेखाओं में भर आभा–जल
दूत सांझ का इसे प्रभाती तक चलने दो!

'यह मंदिर का दीप' कविता में महादेवी वर्मा ने कहना चाहा है कि साधक को अपनी साधना करने दो! साधक प्रचार के लिए साधना नहीं करता है । वह किसी को दिखाने के लिए या प्रशंसा के लिए साधना नहीं करता है। वह अपने संकल्प को पूरा करने के लिए साधना करता है। इस कविता में मन्दिर के दीप को साधक का प्रतीक बनाया गया है।

महादेवी वर्मा कहती हैं कि यह मंदिर का दीपक है। इसे चुपचाप जलने दिया जाए। यह दीपक एक संकल्प के साथ जल रहा है। इसका संकल्प यह कि मंदिर का इष्ट देव अँधेरे में न रहे। वह पूरी रात जलकर अपने देवता के घर में प्रकाश बनाए रखना चाहता

महादेवी मंदिर की दिनचर्या की चर्चा करती हुई कहती हैं कि चाँदी के रंग के शंख– घड़ियाल और सोने के रंग की

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Research in Economics and Social Science (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org
Vol 9 Issue4, August-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ध्वनी – वीणा की मधुर ध्वनियों ने आरती के समय को सैकड़ों लयों से भर दिया था। उस समय सुंदर कंठ ध्वनियों का मानो मेला लगा हुआ था। इन सबके प्रभाव से मानो मंदिर की दीवारों में लगे पत्थर भी पिघल पड़े थे। मंदिर के अँधेरे कोने भी मानो खेलने लगे थे। मगर रात होते ही सब लोग चले गए मंदिर का दरवाजा बंद कर दिया गया। अब मंदिर के इष्ट देवता नितांत अकेले रह गए हैं। मंदिर का आँगन सूना–सूना लग रहा है। महादेवी कहती हैं कि मंदिर के इस सूनेपन को दूर करने के लिए इस दीपक को जल जलकर चलने दो! यदि यह दीपक नहीं जलेगा तो यह सूनापन दूर नहीं हो सकेगा।

पुनः कवयित्री मंदिर की दिनचर्या का जिक्र करते हुए कहती हैं कि दिन भर में न जाने कितने श्रद्धालु मन्दिर में आए। उनके कदमों के निशान से अलिंद की भूमि भर गयी और सुनहली लगने लगी। श्रद्धालुओं के मस्तक झुकाकर स्पर्श करने से चंदन का चौखट निशानों से भर गया है। दिन भर मन्दिर में फूल झरते रहे और अक्षत बिखरते रहे। पूजा– पाठ और भोग चढ़ायी जानेवाली असंख्य वस्तुओं से मंदिर भरा पड़ा था। मगर रात होते ही ये सारी चीजें अँधेरे में डूब जाएँगी। दिन भर में जितने लोगों ने पूजा–अर्चना की है उन सबकी पूजा की कथा इस दीपक की लौ में पलने दो! यदि यह दीपक नहीं जलेगा तो सबकी अर्चित कथा मानो अँधेरे में डूब जाएगी।

एक–एक क्षण मानो माला के दाने की तरह बढ़ता गया और रात आ गयी। विश्व–रूपी पुजारी इन दानों को, जाप करते हुए बढ़ाता गया और अंत में थक कर सो गया। मंदिर में ध्वनियों की गूँज अनुगूँज मौजूद रहती है। रात होने पर इन सबका ब्यौरा मानो पत्थर की दीवारों में खो गया। चारों तरफ ऐसा सन्नाटा था कि सोये हुए लोगों की साँसों का आना–जाना भर सुनायी पड़ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो जीवन साँसों की समाधि बन गया हो। चारों तरफ अँधेरा ऐसे फैला मानो स्याही का समुद्र फैला हो और उस तक जाने के रास्ते बिखरे हों। रात में सब कुछ इतना खामोश हो गया था मानो कण–कण की गतिशीलता और मुखरता स्थगित हो गयी हो। दीपक की ज्वाला में इन सब खोयी हुई चीजों को अपना रूप प्राप्त कर लेने दो और उन सबमें प्राण तत्त्व का संचार हो जाने दो। अगर दीपक नहीं होगा तो ये सारी चीजें अँधेरे में डूब जाएँगी। रात हो गयी है। शोर करती हुई वायु प्रवाहित हो रही है। वह ऐसे बह रही है मानो दिशा भूल गयी हो! कभी इधर से कभी उधर से । मेरी इच्छा है कि आज यह दीपक पुजारी बन जाए, वह प्रकाश का एक छोटा–सा प्रहरी है। दिन की हलचल लौटने तक के लिए यह साधक दीपक जागता रहेगा।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

SOUVENIR

CVRU

DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

INTERNATIONAL CONFERENCE

On

"Globalization of Teacher Education

21st & 22nd July, 2018

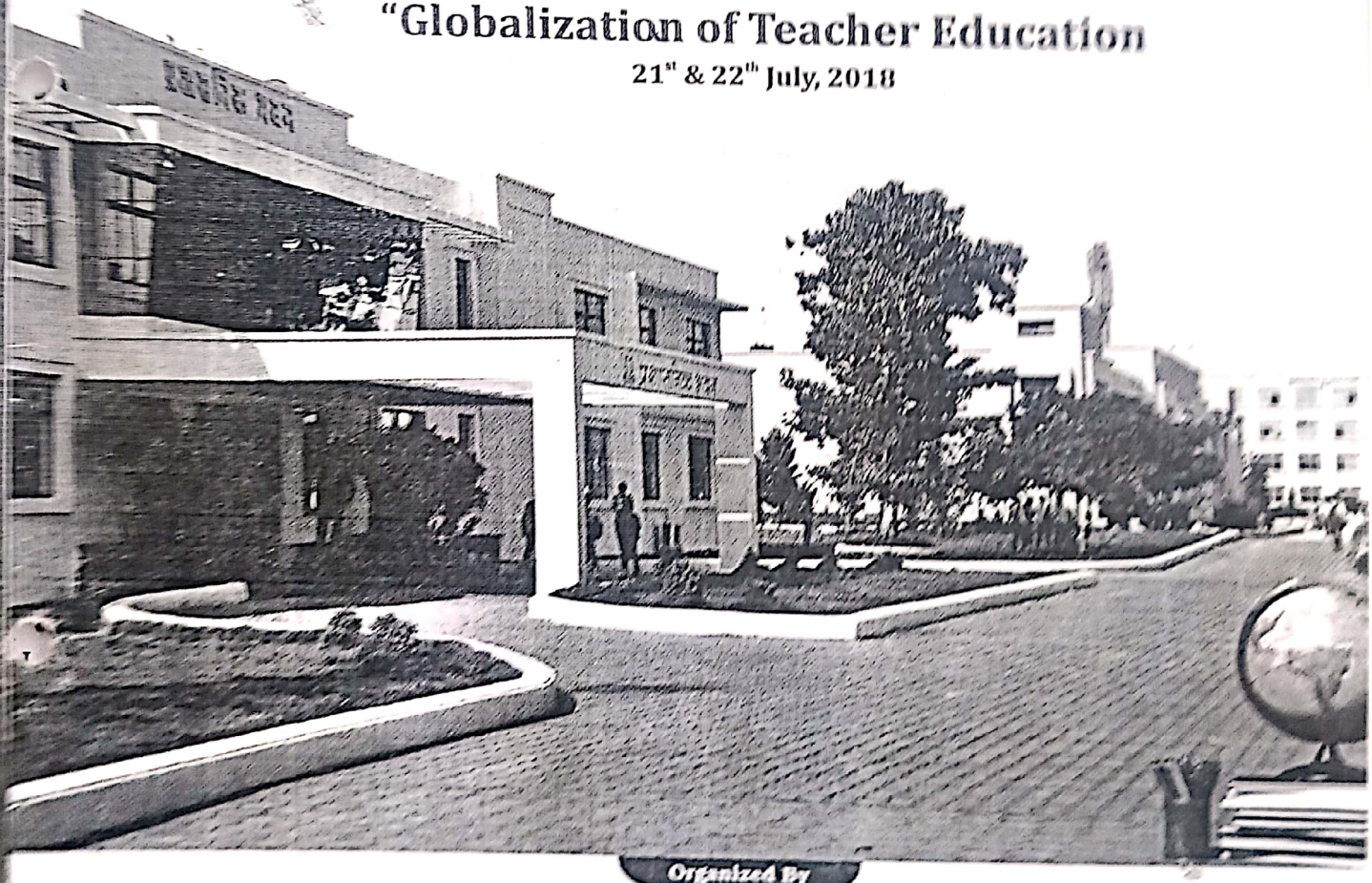

Organized By

Department of Education

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

In Association With

Council for Teacher Education (CTE)

Venue: Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

www.cvru.ac

Scanned with OKEN Scanner

53	The impact of ICT on Teacher Education at Present ...	Dr Sunil Kumar Sain	26
54	A Study on Need of ICT in Teacher Education	Srishti Tamrakar	27
55	Information and Communication Technologies	Sanjeevani Thakur	27
56	A Comparative Study among the Student -Teachers of	Manisha VijayVargiya	28
57	Global Role of Teacher Education	Sangeeta Yadav, Nand Kumar Singh	28
58	Personality Dimensions, Cognitive Differentiation and Gender ...	Sona Ram Verma	29
59	History of In-service Teacher Education in India	Dr. Saummya Tiwari	29
60	Globalization and the Preparation of Quality Teacher	Smt. Bharti Kuldeep	30
61	Ethical and Moral Value of Teacher Education	Dr. Vibha Mishra, Shri Dhanlal Jaiswal	30
62	आईसीटी आधारित अध्यापक शिक्षा	Nayana Pahadiya	31
63	नवीन शिक्षण सीखने की प्रक्रिया	Sarika Sahu	31
64	वैश्वीय परिवर्तन का शिक्षक शिक्षा पर प्रभाव	रश्मि शुक्ला	32
65	भूमण्डलीकरण एवं शिक्षको की व्यावसायिक सुदक्षता	डॉ. अनिता सिंह	33
66	डी एल एड प्रशिक्षण संस्थाओ का सम्पूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन	सत्य प्रकाश यादव,	33
67	शिक्षक शिक्षा मे शिक्षण प्रतिमानो के नवीन आयाम	डॉ. (श्रीमती) शोभा पुष्कर, शैलजा पवार	34
68	शिक्षक,शिक्षण एवं आईसीटी	सरस्वती साहू	34
69	सेवारत् एवं सेवापूर्व– अध्यापक शिक्षा	Dr. Snehlata Nirmalkar	35
70	समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक की तैयारी	Mithalesh Singh Rajput	35
71	विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण का अध्ययन ...	प्रो. पी.के. नायक,, सीमा अग्रवाल	36
72	शिक्षक , शिक्षकीय प्रशिक्षण को बेहतर बनाने हेतु सरकार का प्रयास	अनिता यादव	37
73	सफल शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्माण कैसे किया जाए	सविता यादव	38
74	पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ	विजय कुमार गारूडिक, नीता गारूडिक	38
75	इटर्नशिप कार्यक्रम भावी शिक्षको को कार्यक्षम बनाने डाइट की भूमिका	प्रीति देशपांडे	39
76	सामाजिक विज्ञान विषय के अधिगम मे नाट्य विधि का प्रयोग एवं ...	छाया शर्मा	40
77	शिक्षा सभी के लिये	Neelima Gupta, Digree Lal Patel	41
78	शिक्षा के क्षेत्र मे आई सी टी की भूमिका	प्रियंका चन्दा, विनय खाण्डेकर	41
79	वैश्विक परिदृश्य मे शिक्षा का लोकव्यापीकरण	प्रीति द्विवेदी	42
80	ICT based on current model in Teacher education	Vidya Bhushan Sharma	43
81	भावी शिक्षको की आर्थिक साक्षरता स्तर पर सम्बधित शोध साहित्यों ...	धर्मबीर पटेल	43
82	शिक्षक शिक्षा पर वैश्विक परिवर्तन का प्रभाव	Vijay Kumar Sahu	44
83	Innovative teaching learning process	ममता सोनेश्वर	45
84	वैश्वीकरण और शिक्षक शिक्षा	खुशबू राठौर	45
85	भूगोल शिक्षण मे सूचना एवं सचार प्रौद्योगिकी	काजल मोइत्राए मंजूषा साहू	46
86	वैश्विक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र मे सरकार एवं अन्य	भूमिका देवॉगन	46
87	वैश्विक सदर्भ मे शिक्षक शिक्षा मे नवाचार	ज्योति सक्सेना	47
88	शिक्षक प्रशिक्षण मूलत निरंतरता, परिवर्तन एवं कौशलो का समागम	दीप्ति सिंह राठौर	48
89	वैश्विक प्रवृत्ति मे अध्यापक शिक्षा	राहुल कुमार तिवारी, कुलजीत सिंह	49
90	वर्तमान समय मे नवाचारी शिक्षण का स्थान–भारत के सन्दर्भ में	Kavita Biswas	49
91	प्रारभिक भाषा शिक्षण सिद्धातो से कक्षा तक	हीराधर सिन्हा	50
92	शिक्षक शिक्षा पर वैश्विक परिवर्तनो का प्रभाव	डॉ. अरविन्द कुमार यादव, सुनील यादव	50
93	" व्यवहारिक ज्ञान के सदर्भ मे इन्टरशिप कार्यक्रम की भूमिका "	मंजू भट्ट	50
94	शिक्षक–शिक्षा के नैतिक और नैतिक मूल्य	सुशील कुमार श्रीवास	51
95	शिक्षक शिक्षा मे वैश्विक रुझान एवं समस्याएँ	राखी शर्मा	52
96	शिक्षा मे नवाचार	सीमांचल त्रिपाठी	53
97	प्राचीन एवम् आधुनिक शिक्षा एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ महेश कुमार शुक्ल, अतुल कुमार मिश्र	54
98	"आधुनिकता एवम् शिक्षा का पारस्परिक सम्बन्ध"	अभिषेक अग्रवाल, विपिन तिकी	54
99	प्राचीन कालीन एवं बौद्धकालीन शिक्षा	नवीन कुमार श्रीवास्तव	55
100	शिक्षा मे नवाचार	अन्नामलिका	56
101	ICT Based Teacher Education	ईश्वरी कुमार सिन्हा	56
102	उच्च शिक्षा मे आई सी टी का प्रयोग एवं महत्व	कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ. रामरतन साहू	57
103	शैक्षणिक वैश्वीकरण मे भ्रष्टाचार की प्रभाविता	रूद्रेश कुमार पाण्डेय	58
104	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो की मानसिक स्वास्थ्य	दुर्गावती मिश्रा, डॉ प्रमोद कुमार नायक	58

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

Global Trends in Teacher Education
वैश्विक प्रवृत्ति में अध्यापक शिक्षा

राहुल कुमार तिवारी
शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र, डॉ. सी.वी.रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
कुलजीत सिंह
एम.फिल. शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र, डॉ. सी.वी.रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था– " मैं नहीं चाहता की मेरा घर सब तरफ खड़ी हुयी दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियां बन्द कर दी जाए। मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आस–पास देश–विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहें।" महात्मा गांधी की यह उक्ति वैश्वीकरण की अवधारणा का सार प्रस्तुत करती है। वैश्वीकरण शब्द विश्व शब्द से बना है जिससे यह अर्थ निकलता है कि यह एक व्यापक अवधारणा है– जिसका अर्थ है कि किसी भी विषय, घटना, समस्या या सिद्धान्त को सम्पूर्ण विश्व के संदर्भ में देखा जाए, नई नहीं है। भारत में पुरातन काल से ही " वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव स्वीकार किया गया है। पर वर्तमान युग में वैश्वीकरण की अवधारणा एक नये रूप में सामने आयी है। वैश्वीकरण के इस युग ने देश–विदेश की सीमाओं का परे रखते हुए संपूर्ण विश्व के लोगों को एक दूसरे से जुड़ने का एक बड़ा मौका दिया है। ऐसे तेजी से बदलते परिवेश में खुद को बनाये रखने के लिए नित नये ज्ञान का सृजन करना होगा।

***

वर्तमान समय में नवाचारी शिक्षण का स्थान–भारत के सन्दर्भ में

Kavita Biswas
Asst. Prof. Sandipani Academy Edu. College Bilaspur

सभी मूर्त – अमूर्त वस्तु या क्रिया में परिवर्त ही प्रकृति का निश्चित नियम है। परिवर्तन ही व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतन, ऊर्जा, तथा नवीनता की उपलब्धि होती है। नए तकनीकें तथा सिध्दांत शिक्षा के विभिन्न पक्षों को प्रभावित कर रहे है, उन्हें नवाचार कहा जा सकता है। नवाचारी शिक्षण कोई नया कार्य करना ही नही है, बल्कि किसी भी कार्य को नवीनतम् विधियों से करना भी नवाचारी शिक्षण है। इस तरह नवाचारी शिक्षण एक विचार है, एक व्यवहार है, जो नवीनं और वर्तमान का गुणात्मक प्रतिरूप है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्याकी (NCF) 2005, शिक्षाके उनदृश्य– अदृश्य आयाम की वांछानीयता पर विस्तृत चर्चा एवं तार्किक दृष्टिकोण प्रस्तुती करता है, जो बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए आवश्कयक है। शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा के लक्ष्यों जिसमें बच्चों को क्या पढ़ाया जाये, की कसौटी पर विचार करते हुए पाठ्यचर्या निर्माणपांच निर्देशक सिद्धन्तों का प्रस्ताव रखा गया हैं।

राज्य शैक्षिण अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उ.प्र. लखनउ द्वारा(2011 - 12) नवाचार शिक्षण पद्धतियों पर आधारित प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया है। जिसका उद्देश्य समस्त शिक्षण लाभान्वित करवाना तथा बच्चों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुरुचिकर एवं गुणवक्तापूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को बनाना है। भोपाल 2014 मध्यप्रदेश शासन द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे गुणात्मक एंव रोजगारोन्मुखी नवाचारों को विश्विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) अपने कार्यक्रमो में समाहित करने का प्रयास करेगा।

छत्तीसगढ. राज्य द्वारा शिक्षको को शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार का प्रशिक्षण दिया गया है। जिसका उद्देश्य शिक्षा के स्तर में उन्नति की निरंतरता को बनाये रखना है तथा इसका प्रयोग करके शिक्षण शैली में निखार लाना हैं।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक बिहार का सृजन: एक ऐतिहासिक विश्लेषण–प्रो० (डॉ०) अर्चना कुमारी साह	1902
धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में 'परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति'–आलोक कुमार	1906
विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिरुचि का अध्ययन–डॉ० क्षमा पाण्डेय; डॉ० नीरज कुमार	1909
भारतीय चित्रकला के प्रारम्भिक स्वरूप एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन–डॉ० अरविन्द कुमार यादव	1913
संयुक्त परिवार पर आधुनिकीकरण का प्रभाव–संतोष विश्वकर्मा	1916
"उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थियों के शालेय समायोजन एवं परीक्षा संबंधी चिंता का अध्ययन"–दीप्ति सिंह राठौर	1919
पं० दीन दयाल उपाध्याय जी का शैक्षिक एवं सामाजिक योगदान–पूजा सिंह	1923
21वीं सदी की महिला आत्मकथाकारों के स्वर: एक सूक्ष्म दृष्टि–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मण्डल	1926
गरुड पुराण में वर्णित औषध विज्ञान (भैषज्यशास्त्रों के विशेष सन्दर्भ में)–संजय कुमार	1929
तर्क की प्रधानता: रेने देकार्त का इतिहास पर आक्षेप एवं विको का प्रत्युत्तर–अभय पाण्डेय	1931
शिकंजे का दर्द: दलित एवं पराधीन स्त्री की मुक्तिकामना–डॉ० रीता चौधरी	1936
दलित साहित्य: नये क्षितिज की खोज–प्रो० सूरज बहादुर थापा	1939
भारतीय राजनीति में पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर का योगदान–मनोज कुमार	1943
समाजशास्त्र का स्वरूप एवं परिभाषा–डॉ० शशि गुप्ता	1946
एचआईवी-एड्स का सामाजिक कलंक: समाज की भूमिका–चंद्रेश कुमार	1949
बच्चन सिंह की साहित्येतिहास दृष्टि–सत्य प्रकाश सिंह	1956
वेदकालीन कृषि अर्थव्यवस्था: एक अध्ययन–डॉ० राहुल कुमार संतोष	1959
19वीं सदी में भारतीय नारी व समाज में व्याप्त कुरीतियाँ–डॉ० ललित मोहन शर्मा; श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना	1963
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप एवं विशेषता–डॉ० दिवाकर प्रसाद	1965
21वीं सदी के हिंदी साहित्य में किन्नर समाज एवं संस्कृति: एक अध्ययन–डॉ० हेमन्त पाल घृतलहरे	1968
"खरपतवार पौधों के फाइटोकेमिकल विश्लेषण" का अध्ययन–श्रीति मजुमदार	1971

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

"खरपतवार पौधों के फाइटोकेमिकल विश्लेषण" का अध्ययन

श्रीति मजुमदार

सहायक प्राध्यापक, सांदीपनि एकेडेमी, पेंड्री, मस्तूरी, बिलासपुर(छ.ग.)

सारांश

मेरे अध्ययन में दो खरपतवार पौधों का चयन किया गया, जिनमें एल्कलॉइड, फ्लेवेनॉइड्स, टैनिन, सैपोनिन, टेरपेनोइड्स, का मेरे अध्ययन में दो खरपतवार पौधों का चयन किया गया, जिनमें एल्कलॉइड, फ्लेवेनॉइड्स, टैनिन, सैपोनिन,, सैपोनोन अनुपस्थित पाए गए। इन यौगिकों का मानव रोगजनकों के खिल्लाफ महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है, जिनमें वे भी शामिल हैं जो आंतों में संक्रमण का कारण बनते हैं और जिनके रोग होने की सूचना है कई रोगजनकों के खिलाफ उपचारात्मक गुण और इसलिए विभिन्न के उपचार में उनके उपयोग का सुझाव दिया जा सकता है सी.एल्बम के अध्ययन में पाया गया कि एल्कलॉइड, कार्बोहाइड्रेट, ग्लाइकोसाइड, फिनोल, सैपोनान, टैनिन, ट्रैपेनॉइड, रेजिन, कूमारिन मौजूद हैं और फ्लेवेनॉइड क्युनैन अनुपस्थित पाए गए।

मुख्य शब्द- फाइटोकेमिकल, और खरपतवार पौधे।

परिचय

पौधे पृथ्वी ग्रह पर समस्त जीवन का आधार हैं। प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से, वे ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जिस हवा में हम सांस लेते हैं उसे शुद्ध करते हैं। दुनिया भर में पौधे हर साल 123 बिलियन मीट्रिक टन कार्बन संसाधित करते हैं, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का निर्माण रुक जाता है। 80 प्रतिशत से अधिक मानव आबादी औषधीय पौधों की 50,000-80,000 प्रजातियों का उपयोग करती है; और संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्धारित शीर्ष 150 फार्मास्यूटिकल्स में से 75 प्रतिशत पौधों से प्राप्त होते हैं। लगभग 4 बिलियन हेक्टेयर वन दुनिया भर में फैले हुए हैं और पक्षियों, स्तनधारियों और अन्य जीवों के लिए महत्वपूर्ण आवास के अलावा लुगदी, लकड़ी का कोयला, फाइबर और लकड़ी प्रदान करते हैं। पौधे द्वितीयक मेटाबोलाइट्स के लिए उपयोगी और विविध संश्लेषण के आनुवंशिक एन्कोडिंग के साथ पर्यावरण को अनुकूलित करने के लिए विकसित हो रहे हैं। मानव जीवन में, इन यौगिकों का उपयोग दवाओं, स्वाद, या आराम देने वाली दवाओं, विशेष रूप से आवश्यक तेलों (काबेरा एट अल., 2014) के रूप में किया जाता है। ऐसे पौधों को खरपतवार कहा जाता है। संक्षेप में, "एक पौधा जिसकी खेत के लिए क्षमता उसकी अच्छाई की क्षमता से अधिक है (श्रीवास्तव एर अल., 2014)। ये पारिस्थितिक कार्य पौधे के अस्तित्व को गहराई से प्रभावित करते हैं, और हम कम अपमानजनक शब्द "पौधे के प्राकृतिक उत्पाद" को अपनाना उचित समझते हैं। द्वितीयक पादप चयापचयों का वर्णन करने के लिए जो मुख्य रूप से अन्य प्रजातियों पर कार्य करते हैं (क्रोटेउ एट अल., 2000)

फाइटोकेमिकल्स:-

पौधों में कुछ कार्बनिक यौगिक होते हैं जो मानव शरीर पर निश्चित शारीरिक क्रिया उत्पन्न करते हैं और इन जैव सक्रिय पदार्थों में टैनिन, एल्कलॉइड, कार्बोहाइड्रेट, टेरपेनोइड, स्टेरॉयड और फ्लेवोनोइड शामिल हैं। अधिकांश मामलों में ये पदार्थ उन्हें पैदा करने वाले पौधे के लिए गैर-आवश्यक प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए, कवक की कुछ प्रजातियों (परिवार: पेनिसिलिनसी) द्वारा उत्पादित पेनिसिलिन का मनुष्य के लिए एंटीबायोटिक के रूप में बहुत महत्व है, लेकिन इसे पैदा करने वाले सूक्ष्मजीवों के लिए यह कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा नहीं करता है (नजोकू एट अल., 2009)। निष्कर्षण (जैसा कि यह शब्द फार्मास्युटिकल रूप से उपयोग किया जाता है) मानक प्रक्रियाओं के माध्यम से चयनात्मक सॉल्वैंट्स का उपयोग करके पौधों (और जानवरों) के ऊतकों के औषधीय रूप से सक्रिय भागों को अलग करना है। पौधों से प्राप्त उत्पाद तरल या अर्धठोस अवस्था में या (विलायक को हटाने के बाद) सूखे पाउडर के रूप में मेटाबोलाइट्स के अपेक्षाकृत जटिल मिश्रण होते हैं, और मौखिक या बाहरी उपयोग के लिए होते हैं (तिवारी एट अल.,2011)। विभिन्न पौधों के भाग, जिनमें शामिल हैं फूल, पत्तियाँ, पत्ती कूड़ा और पत्ती गीली घास, तना, छाल, जड़ें, मिट्टी और मिट्टी से लीचेट और उनके व्युत्पन्न यौगिक। इस प्रकार, फसलों के अंकुरण, वृद्धि और उपज पर विशेष जोर देने के साथ जैविक गतिविधियों से जुड़े जैविक उत्पादों की रासायनिक संरचनाओं के अलगाव और पहचान में बढ़ती रुचि ने औषधीय और ऐलेलोपैथिक दोनों गुणों वाले पौधों पर अनुसंधान को प्रेरित किया है (एनडीएएम एम.एल. एट अल) ,2014) टेरिडोफाइट्स सहित भारतीय औषधीय पौधों की समृद्ध विविधता को ध्यान में रखते हुए, यह उम्मीद की जाती है कि, जीवाणुरोधी गतिविधि के लिए पौधे के अर्क की जांच मनुष्यों और पौधों की बीमारियों के लिए फायदेमंद हो सकती है (ग्रेसेलिन। डी.एच.एस. एट अल।, 2013)।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

फाइटोकेमिकल्स का वर्गीकरण

फाइटोकेमिकल्स का सटीक वर्गीकरण अब तक नहीं किया जा सका है, उनकी व्यापक विविधता के कारण..

1. फिनोलिक्स

फेनोलिक फाइटोकेमिकल्स फाइटोकेमिकल्स की सबसे बड़ी श्रेणी है और पौधे साम्राज्य में सबसे व्यापक रूप से वितरित है। आहार संबंधी फिनोलिक्स के तीन सबसे महत्वपूर्ण समूह फ्लेवोनोइड्स, फेनोलिक एसिड और पॉलीफेनोल्स हैं। फेनोलिक हाइड्रॉक्सिल समूह (&OH) होते हैं जिनमें रासायनिक यौगिकों का वर्ग होता है जहां (&OH) सीधे एक सुगंधित हाइड्रोकार्बन समूह से जुड़ा होता है। फिनोल (C6H5OH) को प्राकृतिक यौगिकों के इस समूह का सबसे सरल वर्ग माना जाता है। फेनोलिक यौगिक पौधों में पाए जाने वाले रासायनिक घटकों का एक बड़ा और जटिल समूह है।

2. फ्लेवोनोइड्स

फ्लेवोनोइड्स पॉलीफेनोलिक यौगिक हैं जो प्रकृति में सर्वव्यापी हैं। 4,000 से अधिक फ्लेवोनोइड्स की पहचान की गई है, जिनमें से कई सब्जियों, फलों और चाय, कॉफी और फलों के पेय जैसे पेय पदार्थों में पाए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि फ्लेवोनोइड्स ने प्राचीन काल के सफल चिकित्सा उपचारों में एक प्रमुख भूमिका निभाई है, और उनका उपयोग अब तक जारी है। फ्लेवोनोइड संवहनी पौधों में सर्वव्यापी हैं और एग्लिकोन, ग्लूकोसाइड और मिथाइलेटेड डेरिवेटिव के रूप में पाए जाते हैं।

3. टैनिन

रासायनिक दृष्टिकोण से टैनिन को परिभाषित करना कठिन है क्योंकि इस शब्द में कुछ बहुत ही विविध ओलिगोमर्स और पॉलिमर शामिल हैं। यह कहा जा सकता है कि टैनिन उच्च आणविक भार पॉलीफेनोलिक यौगिकों का एक विषम समूह है जो प्रोटीन (मुख्य रूप से), पॉलीसेकेराइड (सेल्यूलोज, हेमिकेलुलोज, पेक्टिन, आदि), एल्कलॉइड, न्यूक्लिक एसिड और खनिजों के साथ प्रतिवर्ती और अपरिवर्तनीय परिसरों को बनाने की क्षमता रखता है।, आदि। इसलिए उनकी संरचनात्मक विशेषताओं के आधार पर टैनिन को चार प्रमुख समूहों में विभाजित करना संभव है: गैलोटैनिन, एलागिटैनिन, जटिल टैनिन और संघनित टैनिन।

4. एल्कलॉइड

एल्कलॉइड एक प्राकृतिक उत्पाद है जिसमें हेट्रोसाइक्लिक नाइट्रोजन परमाणु होते हैं, जो मूल प्रकृति के होते हैं। एल्कलॉइड का नाम "क्षारीय" से लिया गया है और इसका उपयोग किसी भी नाइट्रोजन युक्त आधार का वर्णन करने के लिए किया जाता था। एल्केलॉइड प्राकृतिक रूप से बड़ी संख्या में जीवों द्वारा संश्लेषित होते हैं, जिनमें जानवर, पौधे, बैक्टीरिया,कवक आदि शामिल हैं।

5. सैपोनिन्स

सैपोनिन द्वितीयक मेटाबोलाइट्स का एक समूह है जो पौधों के साम्राज्य में व्यापक रूप से वितरित पाया जाता है। वे साबुन जैसे जलीय घोल में एक स्थिर फोम बनाते हैं, इसलिए इसका नाम "सैपोनिन" है। रासायनिक रूप से, एक समूह के रूप में सैपोनिन में ऐसे यौगिक शामिल होते हैं जो ग्लाइकोसिलेटेड स्टेरॉयड, ट्राइटरपीनोइड और स्टेरॉयड एल्कलॉइड होते हैं। (सक्सेना एवं अन्य, 2013)

कुछ खरपतवार पौधे :-

- सेंटेला एशियाटिका
- चेनोपोडियम एल्बम

1. सेंटेला एशियाटिका :-

सेंटेला एशियाटिका एल. एक महत्वपूर्ण हर्बल औषधीय पौधा है जिसका उपयोग विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है और भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा में तंत्रिका टॉनिक के रूप में उपयोग किया जाता है। गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल रोग, गैस्ट्रिक अल्सर, अस्थमा, घाव भरने और एक्जिमा जैसी सभी प्रकार की बीमारियों के इलाज में सेंटेला एशियाटिका का उपयोग कई वर्षों से जाना जाता है। पिछले कुछ वर्षों में भोजन और पेय पदार्थों में सेंटेला का उपयोग मूल रूप से इसके स्वास्थ्य लाभों के कारण बढ़ गया है। एंटीऑक्सिडेंट के रूप में, सूजन-रोधी, घाव भरने वाली, याददाश्त बढ़ाने वाली संपत्ति और कई अन्य के रूप में। (हाशिम एट अल.,2014) इसकी जड़ें और पत्तियां औषधीय प्रयोजनों के लिए उपयोग की जाती हैं और स्वस्थ नसों और रक्त वाहिकाओं से संबंधित महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती हैं, त्वचा विकारों का इलाज करती हैं, बेहतर याददाश्त में मदद करती हैं और मस्तिष्क के कार्य में सुधार करती हैं। (तिवारी एट अल., 2011) विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मोनोग्राफ के अनुसार, हर्बा सेंटेला में ट्राइटरपीन एस्टर ग्लाइकोसाइड्स एशियाटिकोसाइड और मैडेकासोसाइड की मात्रा 2% से कम नहीं होनी चाहिए। (जेम्स एट अल.,2009)।

2. चेनोपोडियम एल्बम

भारत वनस्पति और पशु संपदा का एक समृद्ध स्रोत है, जो इसके विविध भौगोलिक और कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण है। विविध जैव विविधता के अलावा, इसकी सांस्कृतिक विरासत भी विविध है। हालाँकि वर्तमान में भारतीय स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में दवाओं की पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रणालियाँ शामिल हैं, आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियाँ और लोक चिकित्सा जैसी असंगठित प्रणालियाँ अच्छी तरह से फल-फूल रही हैं। आयुर्वेद और सिद्ध भारतीय मूल के हैं और लगभग 60% स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में इनका योगदान है सामान्य और 75% ग्रामीण भारतीय आबादी। चिकित्सा की ये दोनों प्रणालियाँ औषधियों के स्रोत के रूप में पौधों, खनिजों, धातुओं और जानवरों का उपयोग करती हैं, जिनमें पौधे प्रमुख स्रोत हैं।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य की समीक्षाः-

काबेरा एवं अन्य.,, (2014) ने माध्यमिक मेटाबोलाइट्स का अध्ययन किया, जिन्हें फाइटोकेमिकल्स, प्राकृतिक उत्पाद या पौधों के घटकों के रूप में भी जाना जाता है, जो उन पौधों के औषधीय गुणों के लिए जिम्मेदार हैं जिनसे वे संबंधित हैं। पौधे में उनकी भूमिका आज तक अच्छी तरह से ज्ञात या समझी नहीं गई है, लेकिन यह सुरक्षा से परे हो सकती है। उनका वर्गीकरण रासायनिक संरचना, संरचना, विभिन्न सॉल्वैंट्स में उनकी घुलनशीलता, या जिस मार्ग से उन्हें संश्लेषित किया जाता है, उस पर आधारित है। मुख्य वर्गीकरण प्रणाली में तीन प्रमुख समूह शामिल हैं: टेरपेनोइड्स, एल्कलॉइड्स और फेनोलिक्स। यह समीक्षा दूसरे मेटाबोलाइट्स, उनके जैवसंश्लेषण, कार्य और वर्तमान औषधीय निष्कर्षों के विवरण से संबंधित है। फार्मास्युटिकल उद्योग में प्राकृतिक उत्पाद दवा उम्मीदवारों का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जितना गहराई से हम उन्हें समझते हैं, वैज्ञानिकों के लिए विभिन्न प्रकार की बीमारियों को कम करने में हस्तक्षेप करना उतना ही आसान होता है। अद्यतन जानकारी प्रस्तुत करने के लिए हालिया संदर्भों से परामर्श लिया गया है, लेकिन दवा अनुसंधान और विकास में पौधे के दूसरे मेटाबोलाइट्स की नई संभावनाओं को भी दिखाया गया है।

श्रीवस्तय ए.के. एवं अन्य., (2014) ने देखा कि छत्तीसगढ़ में चावल पूरे राज्य में मोनोक्रॉप के रूप में उगाया जाता है, चाहे मिट्टी भाटा, मटासी, कन्हार या काली मिट्टी हो। धान के साथ-साथ फसल के खेत में खरपतवार भी उग रहे हैं, इसलिए इन्हें मुख्य फसल के साथ उगने वाले अवांछनीय पौधे माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन शुष्क भूमि काल में खरपतवारों की जैव विविधता के अध्ययन पर आधारित है। इसमें पाया गया कि खरपतवार 21 परिवारों, 42 जीनस और 46 प्रजातियों से संबंधित हैं। बरसात के मौसम में अधिकतम विविधता दिखाई दे रही थी जबकि गर्मियों में न्यूनतम जैव विविधता देखी गई थी। पोएसी को 6 सदस्यों और उदाहरण के लिए परिवारों के साथ अधिकतम विविधतापूर्ण माना जाता था। कैपेरिडेसी, पापावेरेसी आदि मोनोजेनेरिक थे।

नजोकू ओ.वी. एवं अन्य.,, (2009) ने चर्चा की कि विभिन्न परिवारों से संबंधित चार औषधीय पौधों में टैनिन, सैपोनिन, फ्लोबैटैनिन, फ्लेवोनोइड, एन्थ्राक्विनोन, टेरपेनोइड, स्टेरॉयड, एल्कलॉइड, कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड वितरण की जांच और तुलना की गई। जिन औषधीय पौधों की जांच की गई उनमें कैरिका पपीता, ओसीमम ग्रैटिसिमम, एडेनिया सिसाम्पेलोइड्स और सिम्बोपोगन साइट्रेटस शामिल हैं। सभी पौधों में टैनिन, फ्लेवोनोइड्स, टेरपेनोइड्स, स्टेरॉयड और कार्बोहाइड्रेट पाए गए जबकि एंथ्राक्विनोन सभी में अनुपस्थित थे। O- gratissimum और C- citratus दोनों में एल्कलॉइड अनुपस्थित थे। केवल सी. पपीता में ग्लाइकोसाइड अनुपस्थित थे, केवल ओ. ग्रैटिसिमम में सैपोनिन अनुपस्थित थे जबकि केवल सी. साइट्रेटस में फ्लोबैटैनिन अनुपस्थित थे। तेलों का निष्कर्षण विलायक निष्कर्षण और भाप आसवन विधियों द्वारा किया गया था और प्रत्येक विधि द्वारा अर्क की प्रतिशत उपज निर्धारित की गई थी। विलायक निष्कर्षण विधि ने सी. पपीता, ओ. ग्रैटिसिमम, ए. सिसाम्पेलोइड्स और सी. साइट्रेटस के लिए क्रमशः 7.40, 6.30, 6.75 और 5.63% प्रतिशत उपज दी। भाप आसवन के लिए. सी. पपीता, ओ. ग्रैटिसिमम, ए. सिसाम्पेलोइड्स और सी. साइट्रेटस ने क्रमशः 5.60, 5.80, 5.44 और 3.82% की प्रतिशत उपज दी। पारंपरिक चिकित्सा में पौधों के महत्व और नाइजीरिया में जातीय चिकित्सा में इन पौधों की भूमिका के संबंध में इन रासायनिक घटकों के वितरण के महत्व पर चर्चा की गई।

तिवारी एवं अन्य.,, (2011) ने कहा कि पौधे बड़ी मात्रा में दवाओं का एक स्रोत हैं, जिनमें विभिन्न समूह शामिल हैं जैसे कि एंटीस्पास्मोडिक्स, इमेटिक्स, एंटी-कैंसर, एंटीमाइक्रोबियल आदि। बड़ी संख्या में पौधों में एंटीबायोटिक गुण होने का दावा किया जाता है। पारंपरिक प्रणाली और दुनिया भर में जनजातीय लोगों द्वारा भी बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। अब यह माना जाने लगा है कि प्रकृति ने हर बीमारी का इलाज किसी न किसी तरीके से दिया है। आयुर्वेद में पौधों को विभिन्न रोगों से राहत दिलाने के लिए जाना जाता है। इसलिए, शोधकर्ता आज आयुर्वेद में दिए गए पौधों के पारंपरिक दावों के आधार पर कई बीमारियों के खिलाफ विभिन्न पौधों और पौधों के घटकों के मूल्यांकन और लक्षण वर्णन पर जोर दे रहे हैं। बायोएक्टिव पौधों के घटकों का निष्कर्षण शोधकर्ताओं के लिए हमेशा एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। इस वर्तमान समीक्षा में, कुछ निष्कर्षकों और निष्कर्षण प्रक्रियाओं का उनके फायदे और नुकसान के साथ एक सिंहावलोकन देने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्यः-

- पौधे के सेंटला एशियाटिका पत्ती भाग के फाइटोकेमिकल विश्लेषण का परीक्षण।
- पौधे के चेनोपोडियम एल्बम पत्ती भाग के फाइटोकेमिकल विश्लेषण का परीक्षण।

1. विधियाँः-

1.1. पौधे का नमूनाः-

सेंटेला एशियाटिका, मिमोसा पुडिका, कोलोकेसिया एस्कुलेंटा, ऑक्सालिस कॉर्निकुलाटा, चेनोपोडियम एल्बम का पत्ती भाग भिलाई सी.जी. से एकत्र किया गया था। इसके बाद इसकी वानस्पतिक पहचान की गई।

1.2. प्रसंस्करणः-

पौधों के पत्तों वाले हिस्से को छाया में सुखाया जाता था और पिस्तौल का उपयोग करके बारीक चूर्ण बनाया जाता था।

1.3. सत्त तैयार करनाः-

- प्रत्येक पौधे के 10 ग्राम पाउडर को तौला गया और 5 अलग-अलग 100 मिलीलीटर शंक्वाकार फ्लास्क में स्थानांतरित किया गया।
- प्रत्येक फ्लास्क में क्रमशः 100 मिलीलीटर पेट्रोलियम ईथर मिलाया गया।
- शंक्वाकार फ्लास्क को फॉइल पेपर से बंद कर दिया गया और 72 घंटों के लिए कमरे के तापमान पर रखा गया। फिर कच्चे अर्क को व्हाटमैन नंबर 1 फिल्टर पेपर के माध्यम से अर्क को पास करके फिल्टर किया गया (बी.के. एट अल. 2011)

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

सत्त की तैयारी

- सभी पौधों के नमूनों की पत्ती वाले हिस्से को विआयनीकृत पानी से साफ किया गया और 3 दिनों के लिए छाया में सूखने के लिए छोड़ दिया गया। छाया के बाद पत्ती के हिस्से को कुचलने का प्रयास करें और 100 एमएल में कोल्ड एक्सट्रैक्शन विधि द्वारा पेट्रोलियम ईथर में गहरा डालें।
- 3 दिनों के लिए फ्लास्क.
- फिर सत्त को पेट्री प्लेट में छान लें और पेट्रोलियम ईथर के वाष्पीकरण के लिए छोड़ दें।
- वाष्पीकरण के बाद पेट्रिप्लेट से सत्त एकत्र किया जाता है जिसमें चिपचिपा गुण होता है।
- उसके बाद अर्क को आसुत जल में अलग-अलग सांद्रता 25%, 50%, 75% और 100% में पतला किया गया। प्रत्येक पौधे के अर्क का उपयोग जीवाणुरोधी गतिविधि के लिए किया गया था। 25%, 50% की विभिन्न सांद्रता में, 75%, और 100%।
- .25% सांद्रता के लिए 0.25 मिली पौधे की पत्ती का अर्क और 75 मिली आसुत जल लें। फिर 25% सांद्र. मानक समाधान तैयार किया गया.
- 50% सांद्रता के लिए 0.50 मिली पौधे की पत्ती का अर्क और 50 मिली आसुत जल लें। फिर 50% सांद्रण. मानक समाधान तैयार किया गया.
- 75% सांद्रता के लिए 0.75 मिली पौधे की पत्ती का अर्क और 25 मिली आसुत जल लें। फिर 75% सांद्रण. मानक समाधान तैयार किया गया.
- 100% सांद्रता के लिए पौधे की पत्ती का 1 मि.ली. अर्क लें

अवलोकन एवं परिणाम-

ए. पौधे का नमूना: सेंटेला एशियाटिका

फाइटोकेमिकल परीक्षण:

- एल्कलॉइड
  अवलोकन -लाल भूरे अवक्षेप का निर्माण।
  परिणाम- सकारात्मक
- फ्लेवेनॉइड्स
  अवलोकन -एचसीएल के जुड़ने से पीला रंग बनना जो रंगहीन हो जाता है।
  परिणाम - सकारात्मक
- टेरपेनॉइड
  अवलोकन -लाल भूरे रंग का बनना.
  परिणाम - सकारात्मक
- सैपोनान
  अवलोकन -प्रेसिस्टैंक फोम का निर्माण
  परिणाम - नकारात्मक
- टैनिन
  अवलोकन -नीले हरेपन का निर्माण
  परिणाम - सकारात्मक
- फिनोल
  अवलोकन -गहरा नीला या काला रंग
  परिणाम - नकारात्मक
- ग्लाइकोसाइड
  अवलोकन -हरे रंग की अंगूठी के नीचे इंटरफेस पर भूरे रंग की अंगूठी
  परिणाम - सकारात्मक
- कार्बोहाइड्रेट
  अवलोकन -लाल या हल्का बैंगनी रंग
  परिणाम - सकारात्मक
- कुनैन परीक्षण
  अवलोकन -पीला अवक्षेप
  परिणाम - सकारात्मक

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pandri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

- रेजिन
  अवलोकन –गंदलापन उत्पन्न होना
  परिणाम – नकारात्मक
- कूमराइन
  अवलोकन –पीले रंग का बनना
  परिणाम – सकारात्मक
  वी I.
  पौधे का नमूना: चेनोपोडियम एल्बम

फाइटोकेमिकल परीक्षण:

- एल्कलॉइड
  अवलोकन –लाल भूरे अवक्षेप का निर्माण
  परिणाम – सकारात्मक
- फ्लेवेनॉइड्स
  अवलोकन –एचसीएल के जुड़ने से पीला रंग बनना जो रंगहीन हो जाता है।
  परिणाम – सकारात्मक
- टेरपेनॉइड
  अवलोकन –लाल भूरे रंग का बनना.
  परिणाम – नकारात्मक
- सैपोनान
  अवलोकन –प्रेसिस्टैंक फोम का निर्माण
  परिणाम – सकारात्मक
- टैनिन
  अवलोकन –नीले हरेपन का निर्माण
  परिणाम – सकारात्मक
- फिनोल
  अवलोकन –गहरा नीला या काला रंग
  परिणाम – सकारात्मक
- ग्लाइकोसाइड
  अवलोकन –हरे रंग की अंगूठी के नीचे इंटरफेस पर भूरे रंग की अंगूठी
  परिणाम – सकारात्मक
- कार्बोहाइड्रेट
  अवलोकन –लाल या हल्का बैंगनी रंग
  परिणाम – सकारात्मक
- कुनैन परीक्षण
  अवलोकन –पीला अवक्षेप
  परिणाम – नकारात्मक
- रेजिन
  अवलोकन –गंदलापन उत्पन्न होना
  परिणाम – सकारात्मक
- कूमराइन
  अवलोकन –पीले रंग का बनना
  परिणाम – सकारात्मक

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

निष्कर्ष

प्रकृति उच्च फाइटोकेमिकल विविधता की संरचनाओं का एक अनूठा स्रोत है, उनमें से कई में दिलचस्प जैविक गतिविधियां और औषधीय गुण हैं। जैविक प्रणालियों की गतिविधि में फाइटोकेमिकल्स के प्रभावों के संबंध में स्पष्ट कार्यक्षमता और संरचना-गतिविधि संबंध स्थापित करना मुश्किल है। यह मुख्य रूप से समान रासायनिक संरचनाओं के साथ बड़ी संख्या में फाइटोकेमिकल्स की घटना और शारीरिक प्रतिक्रियाओं की जटिलता के कारण है।

मेरे अध्ययन में 2 खरपतवार पौधों का चयन किया गया जिसमें एल्कलॉइड, फ्लेवोनोइड्स, सैपोनिन, टेरपेनोइड्स, टैनिन, कार्डियक ग्लाइकोसाइड, कार्बोहाइड्रेट, क्विनिन, रेजिन, कूमारिन और फिनोल जैसे फाइटोकेमिकल्स शामिल थे। पिछले अध्ययनों में सी. एशियाटिका की पत्ती और कैलस अर्क की फाइटोकेमिकल स्क्रीनिंग में परिणामों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया था, जिसमें एल्कलॉइड्स, ग्लाइकोसाइड्स, टेरपेनोइड्स, स्टेरॉयड, फ्लेवोनोइड्स, टैनिन और कम करने वाली शर्करा की उपस्थिति का पता चला था। मेरे अध्ययन में यह पाया गया कि सेंटेला एशियाटिका में एल्कलॉइड, कार्बोहाइड्रेट, ग्लाइकोसाइड, फ्लेवेनॉइड, टैनिन, टेरपेनोइड्स, क्विनिन, रेजिन, कूमेरिन मौजूद हैं और फिनोल, सैपोनोन अनुपस्थित पाए गए। इन यौगिकों का मानव रोगजनकों के विरुद्ध महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है, जिनमें वे भी शामिल हैं जो आंत्र संक्रमण का कारण बनते हैं और कई रोगजनकों के विरुद्ध उपचारात्मक गुण होने की सूचना है और इसलिए विभिन्न रोगों के उपचार में उनके उपयोग का सुझाव दिया जा सकता है। पिछले अध्ययन में सी. एशियाटिका के परीक्षण किए गए अर्क की जीवाणुरोधी गतिविधि ने निषेध क्षेत्र के संदर्भ में बैक्टीरिया के विकास में महत्वपूर्ण कमी देखी थी। मेरे अध्ययन में सभी पत्तों के अर्क ने खुराक पर निर्भर गतिविधि दिखाई, यानी, 25%, 50%, 75% और 100% में अर्क की सांद्रता में वृद्धि के साथ-साथ निषेध का क्षेत्र भी बढ़ गया। पिछले अध्ययनों में सी. एल्बम की पत्ती के अर्क की फाइटोकेमिकल्स स्क्रीनिंग से एल्कलॉइड, कार्बोहाइड्रेट, टैनिन, राल, स्टेरॉयड, फ्लेवोनोइड और कम करने वाली शर्करा की उपस्थिति का पता चला था, अध्ययन में पाया गया कि एल्कलॉइड, कार्बोहाइड्रेट, ग्लाइकोसाइड, फिनोल, सैपोनान, टैनिन, ट्रैपेनॉइड, रेजिन, कूमारिन मौजूद हैं और फ्लेवेनॉइड कुनैन अनुपस्थित पाए गए।

ग्रंथ सूची:

- लैंडर.आर.डब्ल्यू., पौधों की स्थिति: न्यू इंग्लैंड के मूल वनस्पतियों के संरक्षण के लिए चुनौतियां और अवसर" 2015 न्यू इंग्लैंड वाइल्ड फ्लावर सोसाइटी पीपी. 1-70
- काबेरा एन.जस्टिन., एडमोन एस.मुसा आर.एली और हे एक्स.(2014), "प्लांट सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स: बायोसिंथेसिस, क्लासिफिकेशन, फंक्शन एंड फार्माकोलॉजिकल प्रॉपर्टीज" जर्नल ऑफ फार्मेसी एंड फार्माकोलॉजी 2, पीपी। 377-392
- झेंग डब्ल्यू., वांग एस.वाई., (2001) "चयनित जड़ी-बूटियों में एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि और फेनोलिक यौगिक।" जे एग्रीक
- खाद्य रसायन; 49(11): पृ. 5165-5170. कै वाई.जेड., सन एम, कॉर्क एच. "अमरैंथेसी के पौधों से बीटालेंस की एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि"। जे एग्रीक फूड केम 2003; 51(8): पृ. 2288-2294.
- श्रीवास्तव ए.के., टिकारिहा ए., और पात्रा एस., (2014) "भारत के छत्तीसगढ़ के चुनकट्टा और भिलाई क्षेत्र में उगने वाले खरपतवारों की मौसमी और फूलों की जैव विविधता।" इंटरनेशनल जर्नल्स ऑफ क्यूरेंट माइक्रोबायोलॉजी एंड एप्लाइड साइंस, वॉल्यूम 3 नंबर 6 (2014) पीपी. 318-326
- क्रोटेउ. आर., कुटचन एम.टोनी., और लुईस जी.नॉर्मन., (2000) "प्राकृतिक उत्पाद (माध्यमिक मेटाबोलाइट्स)" पौधों की जैव रसायन और आणविक जीवविज्ञान, 2000, अमेरिकन सोसाइटी ऑफ प्लांट फिजियोलॉजिस्ट (2000) पीपी.1250-1318।
- नजोकू ओ.वी. और ओबी.सी. (2009) "कुछ चयनित औषधीय पदार्थों के फाइटोकेमिकल घटक प्लांट्स" अफ्रीकन जर्नल ऑफ प्योर एंड एप्लाइड केमिस्ट्री, वॉल्यूम 3 (11), पीपी 228-233।
- तिवारी पी, कुमार बी, कौर एम, कौर जी, और कौर एच(2011) "फाइटोकेमिकल स्क्रीनिंग और निष्कर्षण:
- एक समीक्षा" इंटरनेशनल फार्मास्युटिकल साइंस।
- एनडैम एम.एल., मिह1.ए.एम., फोंगोडा ए.जी.एन.,। टेनिंग ए.एस., टोनजॉक आर.के., एनांग जे.ई. और फूजी.वाई.(2014)। बीस (20) में बायोएक्टिव यौगिकों की फाइटोकेमिकल स्क्रीनिंग
- कैमरूनियन औषधीय पौधे" वर्तमान सूक्ष्म जीव विज्ञान और अनुप्रयुक्त विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।, आईएसएसएन: 2319-7706 खंड 3 संख्या 12 (2014) पीपी 768-778
- Gracelin- डी। हेरिन शीबा., ब्रिटो ए. जॉन डे और कुमार पी. बेंजामिन जेया रत्ना (2013) "पांच पेटरिस प्रजातियों में फाइटोकेमिकल्स का गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्मेसी एंड फार्मास्युटिकल साइंसेज, वॉल्यूम 5, सप्ल 1, 2013, पीपी.105-107।
- सक्सैना.एम., सक्सैना जे., नेमा..आर., सिंह.डी. और गुप्ता.ए.(2013) "फाइटोकेमिस्ट्री ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स.," जर्नल ऑफ फार्माकोग्नॉसी एंड फाइटोकेमिस्ट्री वॉल्यूम 1 अंक 6, पीपी। 168-182.
- हाशिम, पी.(2011) "खाद्य और पेय पदार्थ अनुप्रयोग में सेंटेला एशियाटिका और इसके संभावित एंटीऑक्सीडेंट और न्यूरोप्रोटेक्टिव प्रभाव।" इंटरनेशनल फूड रिसर्च जर्नल 18(4): पीपी.1215-1222 तिवारी एस, गेहलोथल एस, और गंभीर (2011), "सेंटेला एशियाटिका: संभावित नैदानिक उपयोगों के साथ एक संक्षिप्त दवा समीक्षा। जर्नल ऑफ स्ट्रेस फिजियोलॉजी एंड बायोकैमिस्ट्री, वॉल्यूम 7 नंबर 1 2011, पृ. 38-44
- जेम्स जैसिंडा टी और. दुबेरी लैन ए (2009)., "मेडिसिनल हर्ब से पेंटासाइक्लिक ट्राइटरपेनोइड्स, सेंटेला एशियाटिका (एल.) अर्बन", मॉलिक्यूल्स 2009, 14, पीपी. 3922-3941
- तमिलारासी टी. और अनंती टी.(2014)., "फाइटोकेमिकल विश्लेषण और मिमोसा पुडिका लिन की एंटी माइक्रोबियल गतिविधि।", रिसर्च जर्नल ऑफ केमिकल साइंस वॉल्यूम। 2(2), पीपी-72-74

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

- रंजन आर.के., कुमार एम.एस., सीतालक्ष्मी आई. और राव एम.आर.के. (2013).,"फाइटोकेमिकल विश्लेषण
- कलिंगवरम, तमिलनाडु से एकत्रित मिमोसा पुडिका की पत्तियां और जड़ें, जर्नल ऑफ केमिकल एंड फार्मास्युटिकल रिसर्च, 2013, 5(5) पीपी. 53-55 जोसेफ बी, जॉर्ज जे. मोहन। जे (2013), "मिमोसा पुडिका 1 के फार्माकोलॉजी और पारंपरिक उपयोग
- इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज एंड ड्रग रिसर्च 2013; 5(2): पीपी. 41-44 डार्कवा एस और डार्कवा एए तारो(2013) "कोलोकैसिया एस्कुलेंटा": घाना में खाद्य उत्पादों में इसका उपयोग", जे फूड प्रोसेस टेक्नोल 2013, वॉल्यूम- 4:5 पीपी-1-7
- प्रदीप सी. और त्यागी, आनंद पी. और टेलर, मैरी और बेकर, डगलस के. और हार्डिंग, रॉबर्ट एम. (2009), "जैव प्रौद्योगिकी दृष्टिकोण का उपयोग करके तारो (कोलोकैसिया एस्कुलेंटा संस्करण एस्कुलेंटा) उत्पादन में सुधार"। साउथ पैसिफिक जर्नल ऑफ नेचुरल साइंस, 27. पीपी. 6-13।
- अग्रवाल मोना वाई., अग्रवाल योगेश पी., शामकुवर प्रशांत बी. (2014), "चेनोपोडियम एल्बम की फाइटोकेमिकल और जैविक गतिविधियां"।, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्मटेक रिसर्च कोडेन (यूएसए): आईजेपीआरआईएफ आईएसएसएन: 0974-4304 वॉल्यूम.6, नंबर 1, पीपी 383-391-
- रोयो ए- और लोपेज। एम. एल (2012), "मिट्टी और जलवायु के प्रभाव के रूप में ऑक्सालिस लैटिफोलिया के दो रूपों द्वारा ताजा पदार्थ का उत्पादन"।, शोध पत्र फसल सुरक्षा।, सिएन। आमंत्रण अग्र. 39(2)पीपी-:309-320.

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pondri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner